तेसिणं सिद्धायतणाणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा—देवदारे, असुरदारे, नागदारे, सुवण्णदारे ॥ तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसंति तंजहा—देवे, असुरे, णागे, सुवण्णे ॥ तेणंदारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं पवेसेणं सेता सरकणगवण्णओ सेसंतंचेव जाव वणमाला ॥ तेसिणं दाराणं चउद्दिसिं चत्तारिमुहमंडवा पण्णत्ता, तेणं मुहमंडवा एगमेगं जोयण सयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं वण्णओ ॥ तेसिणं मुहमंडवाणं चउद्दिसिं चत्तारि चत्तारिदारा,

योजन ऊंचे व आठ योजन चौडे है. उन का प्रवेश भी आठ योजन का है. वे श्वेत कनकमय वगैरह वर्णन योग्य यावत् लम्बी लटकती हुई वनमाला है. उन द्वार की चार दिशी में चार मुख मंडप कहे हैं वे एक सो योजन के लम्बे पचास योजन के चौडे और साधिक सोलह योजन के ऊंचे यावत् वर्णन योग्य है. उन मुख मंडप की चार दिशी में चार द्वार कहे हैं. वे द्वार सोलह योजन के ऊंचे आठ योजन के चौडे व उतने ही प्रवेश वाले हैं शेष सब वनमाला पर्यंत पूर्ववत् जानना. जैसेही [illegible]

पत्तेयं २ वणसंड परिक्खित्ता तत्थ २ जाव तिसोमाण पडिरूवेगा, तोरणा, ॥ तासिणं पुक्खरिणीणं बहु मज्झदेसभाए पत्तेयं २ दाहिमुहपव्वए पण्णत्ते ॥ तेणं दहिमुह पव्वया चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं उड्ढ उच्चत्तेणं एगं जोयण सहस्सं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाण संठिता, दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, इकतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीस जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता सव्वर यणामया अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेयं २ पउमवर वेतिया वणसंड वण्णओ, बहु समरमणिज्ज भूमिभागा जाव आसयंति, सिद्धाययणं तंचेव पमाणं तं अंजण पव्वए

चौसठ हजार योजन के ऊंचे हैं एक हजार योजन के जमीन में हैं, सब स्थान समपल्येक संस्थान वाले हैं. दश हजार योजन के चौडे हैं इकतीस हजार छसो तेवीस योजन की परिधि है. सर्वरत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है. प्रत्येक की चारों ओर पद्मवर वेदिका व वणखण्ड हैं. बहुत रमणीय भूमि भाग यावत् वहां देव बैठते हैं. सिद्धायतन का प्रमाण वैसे ही जानना. यों अंजनक पर्वत की वक्तव्यता कहना. यावत् ऊपर आठ २ मंगल कहे हैं. दक्षिण का अंजनक पर्वत है तब की चारों दिशि

दक्खिणिल्लेणं अंजणपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा भद्दाय विसालाय कुमुयाय पुंडरिगिणी तंचेव पमाणं तहेव दहिमुह पव्वया तंचेव पमाणं जाव सिद्धायणे ॥ तत्थणं जेसे पच्चत्थिमेणं अंजणपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारिणंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा णंदिसेणाय अमोहाय गोत्थुभाय सुदंसणा [illegible] जाव सिद्धायतणं ॥ तत्थणं जेसे उत्तरिल्ले अंजणपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा-विजया वेजयंति

[illegible] कहना जो पश्चिम दिशा में अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदापुष्करिणियों है जिन के नाम—नंदिसेना, अमोघा, गोस्तूभ व सुदर्शना. इनका भी सिद्धा- [illegible] उत्तर दिशा में जो अंजनक पर्वत है, उन की चारों दिशि में चार नंदा [illegible] विजया वैजयंती, जयंती और अपराजिता. इन में सिद्धायतन [illegible] वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक देव [illegible]

भयंती अपराजिता, सेसं तहेव जाव सिद्धायतणा सव्वो चेतियपरिवरणा णेयव्वा, सरयणं वहवे भवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया देवा चाउमासिय पडिवएसु संवच्छरेसुय अण्णेसु बहु जिणजम्मण निक्खमण णाणुप्पपात परिणिव्वाण मादिएसुय देवकज्जेयसुय देवसमुदएसुय देवसमतीसुय देवसमवाएसुय देवपउमणेसुय एगंतओसहिया समुवागया समाणा पमुदित पक्कीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ कारेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेणं विहरंति कयरसास हरिवाहणाय तत्थ दुवे देवा महिड्ढीया जाव पलिउमठितीया परिवसंति से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव णिच्चं जोतिसं संखज्ज ॥ ४२ ॥ णंदी सरवरण्णं दीवे णंदिस्सरवरोदे णामं समुद्दे वट्टे

मातिपदा संवत्सर में और अन्य बहुत जिनभगवान के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और निर्वाण कल्याण इत्यादि दिनों में,देव कार्य,देव समुदाय,देव गोष्टि,देव संबंधी समवाय,और देव संबंधी जीत व्यवहार के प्रयोजन में देवता एकत्रित होते हैं. वहां आनंद क्रीडा, अष्टाहिका महामहोत्सव करते हुवे सुख पूर्वक विचरते हैं. और भी केटास व हरिवाहन नामक दो महर्द्धिक देव यावत् वहां रहते हैं. अहो गौतम ! इस लिये नंदीश्वर द्वीप ऐसा नाम कहा यावत् यह नाम शाश्वत है. ज्योतिषी अष्टाहिक सब संख्याते हैं.

पउमवरवेयणसहा दारा दारंतराय तहेव, संखिज्जाइं जोयण सहस्साइं दारंतरं जाव अट्ठो-
यारे ओ सोतोदगं पडिहत्थाओ उप्पाय पव्वयका सव्ववइरामया अच्छा जावपडिरूवा
आसोग सीयसोगा एत्थ दुवेदेवा महिड्ढिया जाव परिवसंति, से तेणट्ठेणं जाव संखेज्जगं
तहेव ॥४४॥ अरुणदीवे अरुणोदे नामं समुद्दे तस्सवि तहेव परिक्खेवो अट्ठेक्खोदो
एगा णवरि सुभद्द सुमणभद्दा एत्थ दोदेवा महिड्ढिया सेसं तहेव ॥४५॥
अरुणोदगं समुद्द अरुण वरनामे दीवे वट्टेवलयागार संठाण संठिए सेसं तहेव संखेज्जगं

वेदिका वनखण्ड द्वारांतर वैसेही कहना. प्रत्येक द्वार में संख्यात लाख योजन का अंतर है. यावत् अर्थ
कहे है उस में बावडियों प्रमुख है, इक्षुरस समान पानी भरा है. वहां उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय
है अशोक और विशोक नामक दो महर्द्धिक देव वहां रहते हैं. इसलिये अरुणद्वीप कहा है.
सब उद्योतिषी संख्यात है ॥ ४४ ॥ अरुण द्वीप के चारों ओर अरुणोद नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार
रहा हुआ है उस की चौडाई संख्यात लाख योजन है. परिधि भी संख्यात लाख योजन की है
अर्थ की पृच्छा ! यहां पानी समुद्र के पानी जैसा है. इस का सब वर्णन इक्षुरस समुद्र जैसा जानना.
परन्तु यहां सुभद्र व सुमणभद्र ऐसे दो महर्द्धिक देव रहते हैं. शेष वैसेही कहना, ॥ ४५ ॥
अरुणोदक समुद्र प्रति अरुणवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुआ है संख्यात योजन

सूत्र

कुंडलोदे समुद्दे चक्खुसुह चक्खुकंताय इत्थ दो देवा महिड्ढिया,॥ ५१ ॥कुंडलवरदीवे कुंडलवरभद्दा कुडलवरमहाभद्दा एत्थदो देवा महिड्ढिया ॥ ५२ ॥ कुंडलवरोदे समुद्दे कुडलवर कुडल महावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया ॥ ५३ ॥ कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासभद्दे कुडलवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा, ॥ ५४ ॥ कुडलवरोभासोदे समुद्दे कुडलवराभासवर कुंडलवरोभासमहावरा, इत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति ॥ ५५ ॥ कुंडलवरो भास समुद्दं रुयगे नामं दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठंति॥किं समचक्कवाल विसमचक्कवाल?

अर्थ

नामक दो देव रहते हैं. ॥५०॥ बारहवा कुंडलोद समुद्र है वहां चक्षुसुभ व चक्षुकांत नामक दो महर्धिक देव रहते हैं.॥५१॥ तेरहवा कुंडलवरभद्र द्वीप वहां कुंडलवरभद्र और कुंडलवर महाभद्र नामक दो महर्धिक देव रहते हैं ॥५२॥तत्पश्चात कुंडलवर समुद्र हैं. इसमें कुंडलवर व कुंडलमहावर नामक दो महर्धिक देव रहते हैं, ॥ ५३ ॥ कुंडलवराभास चौदहवा द्वीप है. वहां कुंडलवराभासभद्र व कुंडलवराभासमहाभद्र ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं. तत्पश्चात् कुंडलवराभास समुद्र है वहां कुंडलवराभासवर व कुंडलवरा भास महावर नामक दोदेव महर्धिक पाव पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं ॥ ५५ ॥ कुंडलवराभास समुद्र के चारों ओर रुचक द्वीप वलयाकार आकार रहा हुवा है, वहां [illegible]

सूत्र रुयगवरमहाभद्दाय इत्थ दो देवा महिड्ढिया रुयगवरोदे समुद्दे रुयगवरा रुयगमहावरा, इत्थ दोदेवा महिड्ढिया रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभास भद्दे, रुयगवरोभासमहाभद्देय इत्थदोदेवा रुयगवराभासोदे समुद्दे रुयगवरो भासवर, रुयगवरोभासमहावरा इत्थ दो देवा ॥हारदीवे हारभद्द हारमहाभद्दा इत्थ दो देवा॥हारोदे समुद्दे हारवरमहावरा यत्थ दो देवा ॥ हारवरेदीवे हारवरभद्द हारवरमहाभद्दा. हारवरोदे हारवर, हारमहावरा, हारवरवरो भासेदीवे हारवरवरोभासभद्द हारवरवरोभास महाभद्दा हारवरवरोभासोदे

अर्थ रुचक महावर नाम दो देव हैं. तदनंतर रुचक वरावभास द्वीप है. यहां रुचकवराभास भद्र और रुचक वरावभास महाभद्र देव हैं. तत्पश्चात् रुचकवरावभास समुद्र है. यहां रुचक वरावभासवर और रुचक वरावभास महावर ऐसे दो देव हैं. तत्पश्चात् हार द्वीप है. यहां हारभद्र व हार महा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हार समुद्र है. यहां हारवर व हारमहावर देव हैं. तत्पश्चात् हारवर द्वीप है. यहां हारवर भद्र व हारवरमहाभद्र देव हैं. तत्पश्चात् हारवर समुद्र है. इस में हारवर व हार महावर दो देव हैं. तत्पश्चात् हारवरावभास द्वीप है, यहां हारवरावभासभद्र व हारवरावभासमहा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हारवरावभास समुद्र है. यहां हारवराभासवर और हारवरावभास महावर देव हैं. ये सब द्वीप समुद्र के तीन नाम

प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

अनुवादक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी

समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अच्छे. पच्छे. जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते॥वारुणोदस्सणं भंते !समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएण पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा णामए पत्तासवेतिवा चोयासवेतिवा खज्जूरसारेतिवा मुद्दियसारेतिवा सपिक्खोयरसेतिवा, मेरएतिवा कावितसायणेतिवा चंदप्पभातिवा मणोसिलागातिवा वरसिधूतिवा वरवारुणीतिवा अट्ठपिट्ठ परिनिट्ठियातिवा जंबुफल कालियावण्णा वरपसण्णा उक्कोसमदप्पत्ता इसि उट्ठावलंबिणी ईसि तवत्थिकरणी, इसिं वोच्छोयकडुई आसेला मांसला पेसला वण्णेणं उववता जाव

स्वाभाविक पानी समान स्वादवाला है. अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे पत्र का आसव, पुष्प का आसव, खजूर का आसव, द्राक्षासव, पका हुवा इक्षु का रस, मेरक मद्यजाति, कालिसायन, चंद्र प्रभा मदिरा विशेष, मणःशीला का मदिरा, वरप्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी, मदिरा, आठवार पिष्ट परिणत मदिरा, जम्बूफल समान कृष्ण वर्ण वाली मदिरा कृष्ण रसवंत, ओष्ट से पीने से किंचित् विलंब होवे, चढने से चक्षुओं लाल होवे, आस्वाद योग्य, पुष्पकारी, मनोहर वर्ण युक्त यावत् संस्कार युक्त है. अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी क्या ऐसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है. वारुणोदधि समुद्र का पानी

सूत्र

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालोयगण भंते! समुद्दे कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयंभूरमणेणं भंते !समुद्दे कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेणं भंते!समुद्दे मच्छाणं के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं पच जोयण सयाइं एवं कालोयणे सत्त

अर्थ

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है. अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में मच्छ की कितने लाख कुल क्रोड कही हैं?अहो गौतम! नव लाख कुल कोडा कराडी अहो भगवन्!स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साढी बारह लाख कुल कोटि कही. ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर के कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की. अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना

अहो भंते ! [illegible] देवचेरवासाइं उक्कडाइं उरालियाइं भवंति तहातहाणं तेसिं देवाणं एवं पण्णायति तंजहा अणुएवा तुल्लावा सेतेणट्ठेणं गोयमा ! अत्थिणं चंदिमसूरियाणं जाव उवरिंपि तारारूवा अणुवि तुल्लावि ॥ ७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! चंदिम सूरियस्स केवतिओ णक्खत्त परिवारो पण्णत्तो ? केवतिओ महग्गह परिवारो पण्णत्तो, केवतिओ तारागण कोडा कोडीओ परिवारो पण्णत्तो ? गोयमा ! एगमेगस्सणं चंदिम सूरियस्स अट्ठावीसंच हेइ णक्खत्ता एगससीपरिवारो पण्णत्ता, एतो तारागण कोडाकोडीणं महग्गहाइं णवचेयसयाइं पंचसत्तराइं एगससी परिवारो तारागण कोडा कोडीणं ॥ ८ ॥ जंबूदीवेणं भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थि

तारा रूप विमान के अधिष्ठाता देवोंने पूर्व भव में तप, नियम, ब्रह्मचर्य प्रमुख उत्कृष्ट किया जैसे वे देवता कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य होते हैं. अहो गौतम ! इस लिए ऐसा कहा है कि चंद्र सूर्य के नीचे तारा पावत् ऊपर के तारा कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! एक चंद्रमा के कितना नक्षत्र का परिवार [illegible]

रवणमेत्ताए पुहुत्ताए चंद समा गणिज्ज सत्तहिं णउएहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति अट्ठहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सूरविमाणं चारं चरइ, अट्ठाहिं असीएहिं जोयण सएहिं अबाहाए चंदविमाणं चारंचरइ नवहिं जोयण सएहिं अबाधाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरंति॥सव्वहिट्ठिल्लाओणं भंते ! तारारूवातो केवतियं अबाहाए सूरविमाण चारं चरइ, केवतियं आबाहाए चंदविमाणे चार चरइ, केवतियं अबाहाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ? गोयमा ! सव्वहेट्ठिल्लातोणं दसहिं जोयणेहिं सूरविमाणे चारं चरति, णवएहिं जोयणेहिं अबाधाए चंदविमाणे चारं चरति, दसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरंति ॥ सूरविमाणं

योजन ऊंचे सब ज्योतिषी के नीचे तारा मंडल कहा है, ८०० योजन ऊंचे सूर्य विमान चलता है, ८८० योजन ऊंचा चंद्र विमान चलता है, ९०० योजन ऊंचा उपर के तारा रूप विमान चलते हैं. अहो भगवन् ! सब से नीचे के तारारूप विमान से कितने दूर पर सूर्य का विमान चलता है, कितने दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितना दूर पर उपर के तारा रूप मंडल है ? अहो गौतम !

[illegible] कयरे णक्खत्ते सव्व उवरिल्ले चारं चरति, कयरे णक्खत्ते सव्व हेट्ठिल्ले [illegible] गोयमा! जद्दीवे अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्ले तारारूवे [illegible] सव्व बाहिरल्ले तारारूवे चार चरति, साती णक्खत्ते [illegible] णक्खत्ते सव्व हेट्ठिल्ले तारारूवे चारं चरति ॥१२॥ [illegible] गोयमा! अट्ठ कविट्ठ संठाण संठिते, सव्व फालि- [illegible] वण्णओ, एव सूरविमाणावि, एव गहविमाणावि, [illegible] सव्वे अट्ठ कविट्ठ संठाण संठिते ॥ १३ ॥

[illegible] में चाल चलता है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप में अभिजित [illegible] तारारूप में चाल चलता है, मूल नक्षत्र सब से बाहिर के तारारूप में चाल चलता है, [illegible] उत्तर [illegible] चाल चलता है, और भरणि नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! चन्द्र विमान का क्या संस्थान कहा हुआ है? अहो गौतम!

भेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥ १४ ॥
चंदविमाणं भंते! कतिदेव साहस्सीओ परिवहंति? गोयमा! सोलस देव साहस्सीओ
परिवहंति, चंदविमाणस्सणं पुरत्थिमेणं तेयाण सुभगाणं सप्पभाणं संखतलविमलनिम्मल
दधिघण गोखीर फेण रयणिगर पगासाणं थिर लट्ठ पउट्ठ पीवर सुसिणिद्ध सुतिक्ख-
दाढा विडंबियमुहाण रत्तुप्पल पत्तमउय सूउमाल तालु जीहाणं, पसत्थ सलट्ठ वेरुलिय
भिसंत कडक्खाणं विसाल पिवरोरु पडिपुण्णविउल खंधाणं मिउविसत्तय पसत्थ
सुकुमाल सुहुम लक्खण विच्छिण्ण केसरसटोव सोभिताणं चंकमिय ललेतपुव्विय चवलग-

कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है. और ५०० धनुष्य का जाडा है. ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! चंद्र विमानको
कितने हजार देव उठाते हैं. ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव चंद्र विमान को उठाते हैं. जिन में से चार
हजार देव पूर्व दिशा में सिंहरूप धारन कर उठाते है. उनका वर्णन करते हैं. वे सिंह सुभग प्रभावाले शंख
तल जैसे विमल; दाधि, समुद्र, गौ दुग्ध, समुद्रका फेण, चंद्र जैसा श्वेत हैं. स्थीर लष्ट अतीव पुष्ट स्निग्ध व गोल तीक्ष्ण
दाढा सहित मुखवाले हैं. उन की जिव्हा और तालु रक्त कमल जैसा सुकोमल है. उन के नख प्रशस्त वैडूर्यरत्नमय

यवलक्खराण जंबूणयविमलघणमंडलवयरामय लाल'लिपताल पाणा मणिरयण घंटयामग रयतामय रज्जुवल्लंबिय घंटजुयल महुरं समणहराणं अल्लीणपमाणजुत्त वट्टियसुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालग्गत्त परिपुच्छणाणं टवचिय पडिपुण्ण कुम्मचलणलहुविक्कमाणं अकामयणक्खाणं तवणिज्जतलुयाणं तवणिज्ज जीहाणं तवणिज्ज तालुयाणं जोतियाणं कामगमाण पीतिगमाणं मणोहरागं अमिय गहण अमियवलविरियपुरिसकार परक्कमाणं महयागंभीर गुलगुलाइयरवेण मेहुरेणं

[illegible] परिपूर्ण हैं. उन की गरदन में अनेक प्रकार के मणिरत्नमय उत्कृष्ट मुद्रित आभूषण हैं. [illegible] लघु अंकुश कुंभस्थल पर रखा है. रक्त सुवर्णमय [illegible] घंटा [illegible] हैं. अनेक मणिरत्नमय घंटा [illegible] हैं. उन घंटा युगल के शब्द से मनोहर दीखते हैं. लप [illegible] प्रशस्त रक्त सुवर्णमय जिह्वा तालू है रक्त सुवर्णमय [illegible] उन का गमन इष्टानुसार, प्रीतिकारी, मन के अनुसार, व [illegible] बल, वीर्य, पुरुषकार व पराक्रमवंत, हैं. बड़े गंभीर गुड़गुड़ाट और

भ[illegible]ता अंबर दिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ गयरूव धारीणं देवाणं दाहिणिल्लं वहं परिवहंति ॥ ६ ॥ चंदविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सप्पभाणं थकमिय ललिय पुलित चवल चंचल ककुह सोभाणं सण्णय पासाणं समपयासाणं सुजायपासाणं मियमाइत पीणरतिपासाणं झसविहग सुजातकुच्छीणं पमत्थ णिद्दमध गलित भिसंत पिंगलनयणाणं विसाले पीवरोरुय पडिपुण्णविउलखंधाणं वट्ट पडिपुण्णविउल कण्णकडियाणं, इंसि आणयवसणो वट्टाणं धणणिचित सुघडलक्खणुण्णत चंकमितललित चलचंवल गव्वितगतीणं वट्टिय

मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूर्ते और दशों दिशी को शोभित करते हुए चार हजार देव हाथी के रूप से दक्षिण दिशा की बाहा उठाते हैं. ॥ ६ ॥ चंद्र विमान से पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ के रूप से विमान उठाते हैं. वे वृषभ श्वेत, सुभग कान्ति वाले हैं. उन के पासे (पसली) थकमित, ललित व पुलित गति से इधर चलन वाले स्कंध से सुशोभित हैं. [illegible] हुवे हैं, सुजात हैं. प्रमाणोपेत और आनंदकारी हैं. मृग पक्ष अथवा पक्षी जैसी उन

अर्थ

[illegible] रवेणं महुरेणय मणहरेणय पूरिचा अंबरदिसाओय सोभयता चत्तारि देव साहस्सीओ हयरूवधारीणं देवाणं उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति, ॥ ८ ॥ एव सूरविमाणस्सवि पुच्छा ? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहंति ॥ ४ ॥ पुव्वकमणं, ॥ ९ ॥ एवं गहविमाणाणं भंते ! कतिदेव साहस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! अट्ठदेव साहस्सीओ परिवहंति तंजहा-सीहरूवधारीणं दो देव साहस्सीओ पुरच्छिमिल्लं बाहं परिवहंति, दाहिणेणं गयरूव धारीणं दो देव साहस्सीउदाहिणिल्लं बाहं दो देव साहस्सीओ वसभरूवधारीणं, देवाणं पच्चत्थिमिल्ल बाहंपरिवहंति दो देव साहस्सीओ

मधुर, मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे चार हजार देव अश्वरूप से उत्तर दिशाके चंद्र विमान को खेंचा उठाते हैं. ॥ ८ ॥ ऐसे ही सूर्य विमान की पृच्छा करना ! अहो गौतम ! सोलह हजार देव सूर्य विमान उठाते हैं. इस का क्रम भी पूर्वानुसार जानना. अर्थात् चार हजार देव पूर्व में सिंहरूप से हैं. दक्षिण दिशामें चार हजार देव हाथी के रूप से, पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ रूप से और उत्तर दिशा में चार हजार देव अश्व रूप से हैं. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! ग्रह विमान को कितने देव उठाते हैं ? अहो गौतम ! आठ हजार देव उठाते हैं. जैसे कि-सिंहरूवधारी दो हजार देव पूर्व दिशा में, हाथी के रूप से दो हजार देव दक्षिण दिशा में, वृषभ रूप से दो हजार देव पश्चिम दिशा में, अश्व रूप से दो हजार देव उत्तर दिशा में

[illegible] कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढीयावा महिड्ढीयावा ?
[illegible] महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढीया,
[illegible] सूरेहिंतो चंदा महिड्ढीया ॥ सव्वप्पड्ढिया तारा सव्वमहिड्ढीया
[illegible] ॥ [illegible] भंते ! दीवे तारारूवस्स २ एसणं केवतियं
[illegible] ? गोयमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते तंजहा-वाघातिमे य
[illegible] जेसे वाघातिमे से जहण्णेणं दोण्णिसयाइं बावट्ठे जोयणसये
[illegible] सहस्साइं दोण्णिय बाय ले जोयणसए तारारूवस्स २
[illegible] पण्णत्ते ॥ तत्थ णं जेसे णिव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंचधणुसयाइं

सूर्य [illegible] से [illegible] अल्प ऋद्धि वाले हैं और चांद २ महा ऋद्धि वाले हैं ! अहो
[illegible] से नक्षत्र महा ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्र से ग्रह महा ऋद्धि वाले हैं, ग्रह से सूर्य महा ऋद्धि
वाले हैं और सूर्य से चंद्र महा ऋद्धि वाले हैं सब से अल्प ऋद्धि वाले तारा हैं. और महर्षिक

णेतव्वा पच्छा परिसाओ पत्तेयं २ वुच्चंति॥ बंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ अब्भिंतरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ, मज्झिमियाए परिसाए छदेव साहस्सीओ, बाहिरियाए अट्ठदेव साहस्सीओ ॥ देवाण ठिती अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं पचपलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं, चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं, तिण्णि पलिओवमाइं अट्ठोसो चेव ॥ लतगस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अब्भिंतरियाए दो देव साहस्सीओ मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए छदेवे साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती भाणियव्वा अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं बारस सागरो-

सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति है कार्य पूर्ववत् लंतक देवेंद्र की तीन परिषदा.' आभ्यंतर में 'दो हजार देव, मध्य में चार हजार देव और बाहिर की परिषदा में छ हजार देव हैं.' आभ्यंतर परिषदामें देवों की स्थिति बारह सागरोपम सात पल्योपम, बीचकी परिषदामें बारह सागरोपम

णाव वणस्स[illegible]॥वणस्सइ काइयाणं पुढविकालो, पज्जत्तगाणवि एवं चेव वणस्स-तिकालो, [illegible] वणस्सतीणं पुढवि कालो ॥ ५ ॥ अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा तेउकाइया, तेउकाइया असंखिज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउक्काइया, विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया वणस्सइकाइया अणंतगुणा ॥एवं अपज्जत्तगावि पज्जत्तगावि ॥ ६ ॥ एतेसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयरे२ हिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

अर्थात् अपर्याप्त पृथ्वी, अप, तेउ, वायु और त्रसकायका वनस्पति के काल जितना और अपर्याप्त वनस्पति काया का पृथ्वी काया के काल जितना जानना ऐसे ही पर्याप्त का कहना ॥५॥ अब अल्पाबहुत्व कहते हैं, सब से थोड़ा त्रस काया, इस से तेउकाया असंख्यातगुणी, इस से पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक इस से वनस्पति काया अनंतगुनी. इसी तरह पर्याप्त अपर्याप्त

णवि वणस्स[illegible] ॥ वणस्सइ काइयाणं पुढविकालो, पज्जत्तगाणवि एवं चेव वणस्स-
तिकालो, [illegible] पज्जत्ताण वणस्सतीण पुढवि कालो ॥ ५ ॥ अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा
ता[illegible] इया, [illegible] इया अणंतगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया,
[illegible] इया, [illegible] इया विसेसाहिया वणस्सइकाइया अणंतगुणा ॥ एवं अपज्जत्तगावि
पज्जत्तगावि ॥ ६ ॥ एतेसिण भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयरे २
हिंतो अप्पा वा ४ [illegible] ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा पुढविकाइया
पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

अर्थात् अपर्याप्त पृथ्वी, अप, तेउ वायु और वनस्पतिकायका वनस्पति के काल जितना और अपर्याप्त वनस्पति
काया का पृथ्वी काया के काल जितना जानना ऐसे ही पर्याप्त का कहना ॥५॥ अब अल्पाबहुत्व कहते हैं,
सब से थोडा त्रस काय, इस से तेउकाया असंख्यातगुणे, इस से पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया
विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक इस से वनस्पति काया अनंतगुनी. इसी तरह पर्याप्त अपर्याप्त
दोनोंकी अल्पाबहुत्व जानना ॥६॥ अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकाया पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पबहुत्व

सहमनिउया असंखेज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया, एवं अपज्जत्तगाणवि सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, पज्जत्तगाणवि एवं चेव, ॥ एतेसिणं भंते ! सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, एवं जाव सुहुम निउगा एतेसिणं भंते ! सुहुमाण सुहुम पुढविकाइयाण जाव सुहुमणिओयाणय पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया

अर्थ

कहना. अल्पाबहुत्व सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया, इस से सूक्ष्म पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप. काया विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया अनंतगुने, इस से सूक्ष्म विशेषाधिक ऐसे ही अपर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना. और ऐसे ही पर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म के अपर्याप्त, इससे सूक्ष्म के पर्याप्त

अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, एवं बायर तसकाइयस्सवि बायर पुढवि जहा पुढविकाइयस्स बायर आउ सत्तवास सहस्साइं, बायर तेउस्स तिन्निरातिंदिय, बादर वाउस्स तिण्णि वाससहस्साइं, बायर वणस्सइ दसवास सहस्साइं, एवं पत्तेय सरीरस्सवि णिउयस्स जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, एव बायरणिओस्सवि अपज्जत्तगाणं सव्वेसिं अंतो मुहुत्तं, पज्जत्तगाण उक्कोसिया ठिती, अंतोमुहुत्तूणा कायव्वा सव्वेसिं॥बादरस्सणं भंते!

अर्थ

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम. ऐसे ही बादर त्रस काया की स्थिति जानना. बादर पृथ्वी काया की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बाइस हजार वर्ष की, बादर अप्काया की सात हजार वर्ष की, बादर तेउकाया की तीन अहो रात्रि, बादर वायुकाया की तीन हजार वर्ष की, बादर वनस्पति काया की दश हजार वर्ष की. ऐसे ही प्रत्येक वनस्पति काया की जानना. निगोद की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. ऐसे ही बादर निगोद का जानना, सब बादर अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त जानना. सब पर्याप्त की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अपनी २ स्थिति में अंतर्मुहूर्त कम. अहो भगवन् ! बादर की कायस्थिति कितनी कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल. काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रदेश जितनी

सूत्र

[illegible] होइ अपज्जत्तगाणं सव्वेसिं, पज्जत्त बायरस्स बायर तसकायस्सवि
॥ २ ॥ एतेसिण ठिई सागरोवममत पहुत्तं साइरेगं तेउसखेज्जा रातिंदिय,
दुविहाणिउए महुत्तमद्दंतु. सेसाण संखेज्जा वाससहस्साओ सव्वेसिं पज्जत्तगाणं
अतर बायर वणस्सति काइयस्स णियास्स बायराणिउयस्स, एतेसिं
चउण्हवि पुढविकालो जाव असखेज्जालोया, सेसाणं वणस्सतिकालो ॥
एव पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणवि अंतरं उहेय बायरतरु उस्सप्पिणी

अर्थ गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. बादर के पर्याप्त और त्रस काया के पर्याप्त की काया स्थिति प्रत्येक सौ सागरोपम से अधिक जानना. पर्याप्त तेउकाया संख्यात अहोरात्र रहे. दोनों प्रकार के निगोद की काया स्थिति अंतर्मुहूर्त. शेष पृथ्वी, अप्, वायु और प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्त की काया स्थिति संख्यात हजार वर्ष की है. अहो भगवन् ! बादर जीव का कितना अंतर कहा ? अर्थात् कितने काल में पुनः बादरपना प्राप्त करे ? अहो गौतम ! बादर जीव, बादरवनस्पति, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति, और बादर निगोद का पृथ्वीकाय का अंतर कहा यावत् असंख्यात लोक के आकाश प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी. शेष पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु और त्रस इन का अंतर वनस्पति काल जितना होवे. ऐसे ही पर्याप्त और अपर्याप्त का अंतर जानना. अल्पाबहुत्व सब से थोड़े

अनुवादक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी

[illegible] माइरेगं तेउमखेज्जा रातिंदिय,

[illegible]

[illegible] पर्याप्त असंख्यातगुने, बादर अस [illegible] के पर्याप्त असंख्यातगुने, इससे बादर [illegible] पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अप- [illegible] के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर तेजस्काय [illegible]

जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया, बायर तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा तहेव जाव बायर [illegible] असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा सुहुमपढवि काइया विसेसा- [illegible] विसेसाहिया, सुहुमवाउ विसेसाहिया सुहुमनिउया असंखेज्जगुणा, [illegible] असंखेज्जगुणा बायरविसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्ज- [illegible] विसेसाहिया, एवं अपज्जत्तगावि पज्जत्तगावि पज्जत्तए णवरं सव्वत्थोवा

अर्थ अथवा बादर अप्कायिक असंख्यातगुणा, इससे बादर वायुकायिक असंख्यातगुणा, इससे सूक्ष्म तेजस्कायिक असंख्यातगुणा, इस से सूक्ष्म पृथ्वीकायिक विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अप्कायिक विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकायिक विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुणे, इस से बादर वनस्पतिकायिक अनंत गुणे, इस से बादर निगोद विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकायिक असंख्यातगुणे, इस से सूक्ष्म विशेषाधिक, पर्याप्त का अर्थ है अल्प बहुत्व जानना अब पर्याप्त की अल्प बहुत्व कहते हैं. सब से थोडे बादर तेजस्कायिक के पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक के पर्याप्त असंख्यातगुणे, इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति कायिक के पर्याप्त असंख्यातगुणे, इस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुणे, इस से बादर पृथ्वी कायिक के

सूत्र

विसेसाहिया सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया सुहुम वणस्सतिकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया,सुहुमा विसेसाहिया ॥ १२ ॥ कतिविहेणं भंते ! णिउया पण्णत्ता?गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा—णिओयाय णिउदजीवाय ॥ णिओयाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुमणिउयाय बादरनिओयाय ॥ सुहुम निउयाण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय

अर्थ

इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं ! तद्यथा—निगोद सो जीव आश्रिय और निगोद जीव सो तेजस कार्माण वाले जीव आश्रिय. इन में से यहां निगोद का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद अहो भगवन् ! सूक्ष्म निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम !

[illegible]ट्ठयाएवि, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा बादर निओया पज्जत्तआ दव्वट्ठयाए जाव सुहुमनिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमनिउएहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरनिगोदा पज्जत्ता पएसट्ठयाए अणंतगुणा बायरणिओदा अपज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुमनिउए पज्जत्तए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा एवं निउय जीवावि णवरिं संकमए जाव सुहुमनिओए जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरनिओया जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तहेव जाव सुहुम मिउय जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ १७ ॥ एतेसिणं भंते ! सुहुमाणं निगोदाणं

निगोद के पर्याप्त यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य से संख्यातगुने, सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त से बादर निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय अनंतगुने, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त प्रदेश आश्रिय असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय संख्यातगुने. ऐसे ही निगोद जीव की अल्पाबहुत्व कहना. परंतु अल्पाबहुत्व में द्रव्य आश्रिय सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त से बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय असंख्यातगुने, शेष सब वैसे ही यावत् सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय संख्यातगुने ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म निगोद, बादर निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में

बायराणं पज्जत्तगाणं, अपज्जत्तगाणं निउयजीवाणं सुहुमाणं

गाणं दव्वट्ठयाए सट्ठाणे दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा

बायर निओया पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायर निगोदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा,

सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुम निगोदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखे-

ज्जगुणा, सुहुमनिओयाणं पज्जत्ताणं दव्वट्ठयाए बादरनिओदा जीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए

असंखेज्जगुणा, बायर निगोद जीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिओयाजीवा

अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिओया जीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए

संखेज्जगुणा, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा बायरनिउद जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए बायर

प्रदेश, व द्रव्य प्रदेश आश्री कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से

थोडे बादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुणे,

इस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुणे, इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री

संख्यातगुणे, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुणे, इस से बादर निगोद जीव के

अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुणे, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुणे,

इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुणे, अब प्रदेश आश्री कहते हैं, सब से

[illegible] असंखेज्जगुणा सुहुम निउय जीवा अपज्जत्ता [illegible]ट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुम निओद जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, [illegible] पज्जत्ताए हिंतो पदेसट्ठयाए बायर निउया पज्जत्ता पदेस [illegible] बायर निउया अपज्जत्ताए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निउया पज्जत्ताए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ दव्वट्ठपदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बायर निओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायर निओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमनि[illegible] दव्वट्ठयाए हिंतो बायर निओद जीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, [illegible] सुहुमनिओद

अर्थ थोडे बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री, इस [illegible] के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से बादर निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री अनंतगुने, बादर निगोद के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने अब द्रव्य व प्रदेश आश्री कहते हैं सब से थोडे बादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री

॥ षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु सत्तविहा संसार समावण्णगा, जीवा ते एवमाहंसु तंजहा-नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ १ ॥ नेरइयस्स ठिती जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं ॥ एवं तिरिक्खजोणीणवि ॥ मणुस्साविं मणुस्सीवि ॥ देवाणं ठिती जहा नेरइयाणं ॥ देवीणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाणि ॥२॥ नेरइयदेव देवीणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा ॥ तिरिक्खजोणिएणं भंते ! तिरिक्खजोणिएत्ति कालओ

जो इस प्रकार से जीव कहते हैं वे इस तरह कहते हैं १ नैरयिक, २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यणी ६ देव और ७ देवी ॥ १ ॥ नैरयिक की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंचकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम, ऐसही तिर्यंचणी, और ऐसेही मनुष्य व मनुष्यणी की स्थिति जानना देव की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम. और देवी की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की जानना ॥ २ ॥ संचिट्ठणा-नारकी देवता और देवी की संचिट्ठणा स्थिति जितनी जानना. अहो भगवन् ! तिर्यंच तिर्यंच में कितना काल

॥ सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥

सूत्र

तत्थणं जे ते एव माहंसु अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा, ते एव माहंसु तंजहा पढमसमय नेरइया, अपढमसमय नेरइया, पढमसमय तिरिक्खजोणिया, अपढमसमय तिरिक्खजोणिया, पढमसमय मणुस्सा, अपढमसमय मणुस्सा, पढमसमयदेवा, अपढमसमयदेवा ॥ १ ॥ पढमसमय णेरइयस्सणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! पढमसमय णेरइयस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणंवि एक्कं समयं, अपढमसमय नेरइयस्स जहण्णेणं दसवाससहस्साइं समयऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयऊणाइं, पढमसमय तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं एक्कं

अर्थ

जो आठ प्रकार के संसारी जीव कहते हैं उन का कथन इस तरह है—१ प्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, अप्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य अप्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव और अप्रथम समय के देव. ॥ १ ॥ प्रथम समय के नैरयिक की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के नैरयिक की जघन्य एक समय कम दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक समय कम तेत्तीस सागरोपम. प्रथम समय के तिर्यंच की स्थिति

समय मणुस्साणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयऊणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिउवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं ॥ २ ॥ अंतरं पढम-समय नेरइयस्स जहण्णेण दस वास सहस्साइं अत्तो मुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, अपढम समय जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो पढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहणाइं समयऊणाइं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेणं खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ पढम समय मणुस्साणं जहण्णेण दो खुड्डा भवग्गहणाइं समयऊणाइं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो अपढम

उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय मनुष्य की कायस्थिति जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ॥ २ ॥ प्रथम समय के नारकी का अंतर जघन्य दश + हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, अप्रथम समय नारकी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल, प्रथम समय तिर्यंच का अंतर जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पतिकाल अप्रथम समय तिर्यंच का जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागरोपम

× दश हजार वर्ष तो अप्रथम समय नरक का आयुष्य भोगकर तिर्यंच का आयुष्य अन्तर्मुहूर्त कर पुनः नरक में

णवरं अपढमसमय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा। एतेसिं पढमसमय नेरइयाणं अपढम समय नेरइयाणं कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढम समय नेरइया अपढम समय नेरइया असंखेज्जगुणा, एवं सव्वेणय सव्वत्थोवा। पढम समय नेरइयाणं जाव अपढम समय देवाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा पढम समय मणुस्सा, अपढम समय मणुस्सा असंखेज्जगुणा, पढम समय नेरइया असंखेज्जगुणा पढम समय देवा असंखेज्जगुणा पढम समय तिरिक्ख-जोणिया असंखेज्जगुणा, अपढम समय नेरइया असंखेज्जगुणा अपढम समय देवा

गुने, इस से प्रथम समय तिर्यंच असंख्यात गुने. इसी तरह अप्रथम समय नैरयिक यावत् अप्रथम समयदेव की अल्प बहुत्व कहना. परंतु इसमें अप्रथम समय तिर्यंच संख्यातगुने कहना. अहो भगवन्! प्रथम समय नैरयिक व अप्रथम समय नैरयिक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय नैरयिक इस से अप्रथम समय नैरयिक असंख्यातगुने यों सब में कहना. प्रथम समय के नैरयिक यावत् अप्रथम समय के देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं. ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय मनुष्य, इससे अप्रथमसमय मनुष्य असंख्यातगुने, इससे

अंतर उत्कृष्ट	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	सागरोपम शत पृथक्त्व	वनस्पति काल जितना	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल
अल्पाबहुत्व	३ असं-ख्यातगुना	६ असंख्यात गुना	५ असं-ख्यात गुना	८ अनंत गुना	१ सर्वस्तोक	९ असं-ख्यातगुना	४ असं-ख्यात गुना	७ असं-ख्यात गुना

सूत्र असखज्जगुणा, अपढम समय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा, सेत्तं अट्ठविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ सत्तमी पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ७ ॥ * *

अर्थ इस से प्रथम समय नैरयिक असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय देव असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय तिर्यंच अनंतगुने यों आठ प्रकार के जीव की प्ररूपणा हुई. यह सातवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥७॥

सूत्र

अणंते काले, वणस्सति काइयाणं असंखेज्जं काले ॥ अप्पाबहुण सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया तेउकाइया असंखेज्ज-गुना, पुढवि—आऊ—वाउ—विसेसाहिया, वणस्सति काइया अणंतगुणा ॥ सेतं णवविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ अट्ठमी पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ८ ॥ *

अर्थ

पंचेन्द्रिय, इस से चतुरिन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से तेउकाया असंख्यातगुणे, इस से पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया विशेषाधिक, इस से वायु काया विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया अनंतगुणें. यह नव प्रकार के संसारी जीव कहे. यह आठवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ८ ॥ + +

सूत्र

सव्वेसिं पढमसमयियाणं जहण्णेणं एक्कोसमओ उक्कोसेणवि एगोसमओ अपढम समय जहण्णेण खुड्डागं भवग्गहणं समयऊणं उक्कोसेण जा जस्स ठिती सासमयऊणा जाव पचेंदिय तेत्तीस सागरोवमाइं समयऊणाइं ॥ संचिट्ठणा पढमसमयियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण एक्कं समयं, अपढमसमयायिकाणं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयऊणं, उक्कोसेणं एगिंदियाणं वणस्सतिकालो बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदियाणं संखेज्जकालं, पंचेंदियाणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ॥ २ ॥ पढमसमय एगिंदियाणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समयऊणाइं, उक्कोसेण वणस्सतिकालो. अपढम समय एगिंदियस्स अंतरं जहण्णेणं

अर्थ

बाईस हजार वर्ष कम प्रथम समय वाले की जघन्य उत्कृष्ट एक समय की स्थिति है और अप्रथम समय वाले में सब की जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट अपनी २ स्थिति में एक समय कमकी जानना. यावत पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम में एक समय कम की जानना. संचिठण-प्रथम समय वाले की जघन्य उत्कृष्ट एकसमय की जानना. और अप्रथम समयवाले की जघन्य एकसमय में क्षुल्लकभव कम उत्कृष्ट एकेन्द्रियकी वनस्पतिकाल जितनी, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रियकी संख्यातकालकी और पंचेन्द्रिय की सातिक एक हजार सागरोपमकी. ॥२॥ अहो भगवन्! प्रथम समय वाले एकेन्द्रिय का कितना अंतर

सूत्र

खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं दो सागरोवम सहस्साइं संखेज्जाइं वाससय-
हियाइं, सेसाणं सव्वेसिं पढम समइकाणं, अंतरं जहण्णेणं दोखुड्डाइं भवग्गहणाइं,
समयऊणाइं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, अपढम समयिकाणं सेसाणं जहण्णेणं खुड्डगं
भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं वणस्सति कालो, ॥ ३ ॥ पढम समयिगाणं सव्वसि
सव्वत्थोवा पढम समय पचेंदिया, पढमसमय चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया,
विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, एगिंदिया विसेसाहिया॥एवं अपढमसमयगावि नवरिं
अपढमसमय एगिंदिया अणंतगुणा ॥ दोण्हंपि दोण्हं अप्पाबहुं-सव्वत्थोवा पढमसमय

अर्थ

है. ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रथम समय
एकेन्द्रियका जघन्य एकसमय अधिक क्षुल्लकभव उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम और संख्यात वर्ष अधिक प्रथ
मप प्रथम समय वाले का जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल और शे
अप्रथम समय वालेका जघन्य एकसमय अधिक क्षुल्लकभव उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनो. ॥३॥ अल्पाबहु
प्रथम समय वाले में सब से थोडे प्रथम समय वाले पंचेन्द्रिय, इस से प्रथम समय वाले चतुरिन्द्रिय विशेषा-
धिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से एकेन्द्रिय विशेषाधिक. ऐसे ही
अप्रथम समय की जैसा जानना. परंतु यहां एकेन्द्रिय ४ दना. अब दोनोंकी साथ अल्पाबहुत्व कहते

एगिंदिया, अपढम समय एगिंदिया अणंतगुणा. सेसाणं सव्वत्थोवा पढमसमयिगा अपढमसमय असंखेज्जगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! पढमसमय एगिंदिया जाव अपढमसमय पंचेंदियाण य कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय पंचेंदिया, पढमसमय चउरिंदिया विसेसाहिया, एवं हेट्ठामुही जाव [illegible] विसेसाहिया, अपढमसमय पंचेंदिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमय [illegible] विसेसाहिया, जाव अपढमसमय एगिंदिया अणंतगुणा ॥ सेत्त दसविहा

अथ

सब से थोडे प्रथम समय के एकेन्द्रिय, इस से अप्रथम समय के एकेन्द्रिय अनंत गुने. शेष सब में सब से थोडे प्रथम समय वाले, इस से अप्रथम समय वाले असंख्यातगुने कहना. अहो भगवन् ! इन प्रथम समय एकेन्द्रिय यावत् अप्रथम समय पंचेन्द्रिय में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय पंचेन्द्रिय, इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से एकेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से अप्रथम समय के पंचेन्द्रिय असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक और इस से एकेन्द्रिय अनंतगुने. यह दश प्रकार के

अल्पा बहुत्व	वनस्पति काल अधिक	द्वीन्द्रिय काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल
	५ विशेष	१८ अनंत गुने	४ विशेष	० विशेष	३ विशेष	८ विशेष	२ विशेष	७ विशेषाधिक	१ सर्व स्तोक	६ असंख्यात गुने

ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ सेतं संसार समावण्णगा जीवाभिगमणे नवमा पडिवत्ती समत्ता ॥ ९ ॥ :: :: ::

संसारी जीव कहे. यह संसार समापन्नक जीव का जीवाभिगम हुवा. यों नवमी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ९ ॥

स दिस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं असिद्धस्सणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥ ३ ॥ एतेसिणं भंते ! सिद्धाणं असिद्धाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा असिद्धा अणंतगुणा ॥ ४ ॥ आहया दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा-सइंदियाचेव अणिंदियाचेव ॥ सइंदिएणं भंते ! कालओ केवचिर होति? गोयमा! सइंदिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिएवा अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए॥अणिंदिए सादिए अपज्जवसिए दोण्हवि

अर्थ

अहो भगवन्! सिद्ध का अंतर कितना है? अहो गौतम! वे सादिक अपर्यवसित हैं. इससे इनका अंतर नहीं है. अहो भगवन् ! असिद्ध का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! ये अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित हैं. इस से इन का अंतर नहीं है ॥३॥ अहो भगवन् ! इन सिद्ध और असिद्ध में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध इस से असिद्ध अनंतगुने ॥ ४ ॥ अथवा दो प्रकार के सब जीव कहे हैं. सइन्द्रिय व अनिन्द्रिय. अहो भगवन् ! सइन्द्रिय की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! सइन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, अनादि अपर्यवसित (अवध्य) अनादि सपर्यवसित (अवध्य) अनिन्द्रिय, सादि अपर्यवसित

अवेदए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सातिएवा अपज्जवसिए, सातिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जे से सादिये सपज्जवसिए से जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतेमुहुत्त ॥ सवेदगस्सणं भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतर, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ अवेदगस्सणं भंते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकाल जाव अवड्ढ पोग्गल

अवेदी अवेदीपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! अवेदी के दो भेद सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इन में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. अहो भगवन् ! सवेदी का अंतर कितना कहा ? अहो गौतम ! अनादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है. अनादि सपर्यवसित का भी अंतर नहीं है परंतु सादि अपर्यवसित का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. अहो भगवन् ! अवेदी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल. यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम

...सव्वेसिं, णाणस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, अन्नाणिस्स दोण्हवि आदिल्लाणं णत्थि अंतरं ॥ सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं, सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥ अप्पाबहु-सव्वत्थोवा नाणी, अण्णाणी अणंतगुणा ॥९॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—आहारगा चेव अणाहारगा चेव,

इस का जानना. अर्थात इस के तीन भेद कहना अनादि अपर्यवसित सो अभव्य, अनादि सपर्यवसित सो भव्य. और सादि सपर्यवसित इस की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल. क्षेत्र से अर्ध पुद्गल परावर्तन. अहो भगवन् ! ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल. अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम जानना. अज्ञानी के के दो भांगे का अंतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुछ अधिक अल्पाबहुत्व सब से थोडे ज्ञानी इस से अज्ञानी अनंतगुने ॥ ९ ॥ सब जीव के दो भेद कहे हैं. आहारक और अनाहारक अहो भगवन् ! आहारक कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! आहारक के दो

आहारएणं भंते ! जीवा केवचिरं होइ? गोयमा ! आहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा ...

सूत्र

[illegible] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं, सातिरेगाइं ॥ अण्णाणी [illegible], णाणिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकालं अवड्ढं [illegible] ॥ सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं, सागरोवमाइं [illegible] ॥ अप्पबहु-सव्वत्थोवा नाणी, अण्णाणी अणंतगुणा ॥९॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—आहारगा चेव अणाहारगा चेव,

अर्थ

इस का जानना अर्थात् इस के तीन भेद कहना अनादि अपर्यवसित सो अभव्य, अनादि सपर्यवसित सो भव्य, और सादि सपर्यवसित इस की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, क्षेत्र से अर्ध पुद्गल परावर्तन अहो भगवन् ! ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम जानना. अज्ञानी के के दो भांगे का अंतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुछ अधिक अल्पाबहुत्व सब से थोडे ज्ञानी इस से अज्ञानी अनंतगुने ॥ ९ ॥ सब जीव के दो भेद कहे हैं आहारक और अनाहारक. अहो भगवन् ! आहारक कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! आहारक के दो

[illegible] छावट्ठिं सागरोवमाइं, सातिरेगाइं ॥ अण्णाणी [illegible] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकालं अवट्ठ [illegible] आदिल्लाणं णत्थि अंतरं ॥ सादियस्स [illegible] जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं, सागरोवमाइं [illegible] ॥ [illegible] नाणी, अण्णाणी अणंतगुणा ॥९॥ अहवा [illegible] जीवा [illegible] तंजहा—आहारगा चेव अणाहारगा चेव,

[illegible] के तीन भेद कहना अनादि अपर्यवसित सो अभव्य, अनादि सपर्यवसित सो भव्य, और आदि सपर्यवसित इस की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, क्षेत्र से अर्ध पुद्गल परावर्तन अहो भगवन् ! ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अर्ध पुद्गल परावर्त मे कुछ कम जानना. अज्ञानी के के दो भांगे का अंतर है [illegible] और आदि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम मे कुछ अधिक [illegible] सब मे थोडे ज्ञानी इस मे अज्ञानी अनंतगुने ॥ ९ ॥ सब जीव के दो भेद कहे हैं. आहारक और अनाहारक. अहो भगवन् ! आहारक कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! आहारक के दो

[illegible]

अणाहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सिद्ध केवलि अणाहारए य, भवत्थ केवलि
अणाहारए य ॥ सिद्ध केवलि अणाहारएणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !
सादए अपज्जवसिए ॥ भवत्थ केवलि अणाहारएणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ?
गोयमा ! भवत्थ केवलि अणाहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सजोगि भवत्थ केवलि
अणाहारए य, अजोगि भवत्थ केवलि अणाहारए य ॥ सजोगि भवत्थ केवलि अणा-
हारएणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसं तिण्णि
समए ॥ अजोगी भवत्थ केवलि अणाहारए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतो

अहो गौतम ! अनाहारक के दो भेद कहे हैं तथथा—छद्मस्थ अनाहारक और केवली अनाहारक.
अहो भगवन् ! छद्मस्थ अनाहारक कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट
दो समय तक रहे यहां तीन समय की विग्रह गति में प्रथम का समय ग्रहण नहीं किया है. अहो
भगवन् ! केवली अनाहारक की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! केवली अनाहारक के दो भेद
कहे हैं तथथा—सिद्ध केवली अनाहारक और भवस्थ केवली अनाहारक. अहो भगवन् ! सिद्ध केवली
अनाहारक कितना काल रहे? अहो गौतम! वे आदि सहित अन्त रहित होते हैं, भवस्थ केवली अनाहारक कितने

हुवा तुल्लावा?गोयमा!सव्वत्थ्वा अणाहारगा आहारगा असंखेज्जगुणा ॥१०॥
अहो दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा-भासगाय अभासगाय ॥ भासएणं भंते!
भासएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं
अंतोमुहुत्तं ॥ अभासएण भंते! अभासतेति कालओ केवचिरं होइ ?गोयमा! अभासए
दुविहा पण्णत्त तंजहा-सादिएवा अपज्जवासिते, सादिएवा सपज्जवसिते ॥ तत्थण जे
ते साइए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणतंकाल, अणंताओ
उसप्पिणीओ अवसप्पणीओ वणस्सति कालो॥भासगस्सणं भंते!केवतियं कालं अंतरं?

असंख्यात काल यावत अंगुल के असंख्यात भाग प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी. सिद्ध केवली
अनाहारक का सादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है सयोगी भवस्थ कवली अनाहारक का अंतर जघन्य
उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त और अयोगी भवस्थ केवली अनाहारक का अंतर नहीं है. क्यों कि चौदहवे गुणस्थान
में ही प्राप्त होता है अहो भगवन् ! इन आहारक अनाहारक में कौन किस से अल्पबहुत्व है ? अहो
गोयम ! सब से थोड अनाहारक जीव इस से आहारक असंख्यातगुने ॥ १० ॥ भगवा सब जीव के दो
भेद भाषक और अभाषक. अहो भगवन् ! भाषक भाषकपने कितना काल तक रहे ? अहो गौ
जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. अहो भगवन् ! अभाषक अभाषकपने

अचरिमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अणादिएवा अपज्जवसिए, सादिएवा अपज्जवसिए॥दोण्हंवि णत्थि अंतरं॥अप्पाबहु-सव्वत्थोवा अचरिमा,चरिमा अणंतगुणा॥ १३॥ अहवा दुविहे सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा सागारोवउत्ताय आणगारोवउत्ताय, दोण्हंपि संचिट्ठणावि अंतरपि जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त ॥ अप्पाबहुं--सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ सेत्तं दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ दुविहो जीवो सम्मत्तो ॥ १० ॥ * * * * * *

तत्थ जे ते एव माहसु तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, ते एव माहंसु तंजहा-सम्मद्दिट्ठी,

अर्थ

दो भेद कहे हैं अहो भगवन् ! चरिम, चरिमपने, कितना काल रहे ? अहो गौतम ! अनादि सपर्यवसित है. अचरिम के दो भेद अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनों का अंतर नहीं है. अल्पाबहुत्व में सबसे थोडे अचरिम इससे चरिम अनंतगुने ॥१३॥अथवा सब जीवके दोभेद कहे हैं. साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त दोनों की संस्थिति और अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त.अल्पाबहुत्व-सब से थोडे अनाकारोपयोगयुक्त इस से साकारोपयोगयुक्त संख्यातगुने.यों दो प्रकार के सब जीव का कथन हुवा. ॥१०॥

अब तीन प्रकार के जीवों की वक्तव्यता करते हैं, सब जीव तीन प्रकार के कहे हैं. यथा सम्यक्

मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ सम्मदिट्ठीणं भंते ! कालतो केवचिरं होइ ?गोयमा! सम्मदिट्ठी दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सादिएवा अपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थ जे से सादिएवा सपज्जवसिए,से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइ॥मिच्छादिट्ठी-तिविहे पण्णत्ते, तंजहा अणादिएवा अपज्जवसिएवा,अणादिएवा सपज्जवसिए, साइएवा सपज्जवसिए॥तत्थ जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं अणत कालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं॥सम्मामिच्छादिट्ठी जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ सम्मदिट्ठिस्स अंतरं सादियस्स अपज्ज

अर्थ मिथ्यादृष्टि और सम्यग् मिथ्यादृष्टि. अहो भगवन् ! सम्यग् दृष्टि सम्यग् दृष्टिपने रहे तो कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! सम्यग् दृष्टि के दो भेद कहे हैं. सादिअपर्यवसित अर्थात सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई परंतु उस का अंत होवे नहीं सो क्षायक सम्यक्त्व और सादिसपर्यवसित अर्थात् सम्यक्त्व की प्राप्ति होकर सम्यक्त्व से पतित होवे सो क्षयोपशम सम्यक्त्व, इस से सादिसपर्यवसित सम्यक्त्व की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छासठ सागरोपम से कुछ अधिक है, यहां दो भव अनुत्तर विमानवासी देव के और दो भव बीच के मनुष्य के करे तत्पश्चात् अवश्यमेव पतित होवे. मिथ्यादृष्टि के तीन भेद कहे हैं अनादिअपर्यवसित सो अभव्य. अनादि सपर्यवसित भव्य और सादि सपर्यवसित पडवाइ.

वसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं मिच्छादिट्ठिस्स अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं, सम्मामिच्छदिट्ठिस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा सम्मामिच्छदिट्ठी सम्मदिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छदिट्ठी अणंतगुणा॥१॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-परित्ता अपरित्ता

सम्यग्दृष्टि इस में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त मिथ्यादृष्टि की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. सम्यग्दृष्टि का अंतर सादि अपर्यवसित का अन्तर नहीं है क्यों कि सदैव रहता है. सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त मिथ्यादृष्टि अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनों का अन्तर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक ६६ सागरोपम. सम्यग्मिथ्यादृष्टि का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुछ काम अर्ध पुद्गल परावर्त

अणतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्टं देसूणं मिच्छादिट्ठिस्स अणादियस्स अपज्ज-
वसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, साइयस्स
सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं,
सम्मामिच्छदिट्ठिस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गल
परियट्टं देसूणं ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा सम्मामिच्छदिट्ठी सम्मदिट्ठी अणंतगुणा,
मिच्छदिट्ठी अणंतगुणा॥१॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-परित्ता अपरित्ता

अर्थ

सम्यग्दृष्टि इस में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त सम्यमिथ्यादृष्टि की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. सम्यग्दृष्टि का अंतर सादि अपर्यवसित का अन्तर नहीं है क्यों कि सदैव रहता है. सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त. मिथ्यादृष्टि अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनो का अंतर नहींहै और सादि सपर्यवसितका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक छ्छसागरो पम. सम्यमिथ्यादृष्टि का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुछ काम अर्ध पुद्गल परावर्त

अपरित्ता ॥ परित्तणं भंते ! [illegible] कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !
परित्ते दुविहे पण्णत्ते तंजहा-काय परित्तेय, संसार परित्तेय ॥ काय परित्तेणं भंते !
काय परित्तेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, जाव असंखेज्जा लोगा ॥ संसार परित्तेणं भंते ! संसार
परित्तेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं
कालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं ॥ अपरित्तेणं भंते ! अपरित्तेति
कालओ केव चिरहोइ गोयमा ! अपरित्ते दुविहे पण्णत्ते तंजहा—काय अप-

अल्पाबहुत्व-सब से थोडे सम्यग्मिथ्यादृष्टि, इस से सम्यग्दृष्टि अनंतगुने. इस से मिथ्यादृष्टि अनंतगुने ॥ १. ॥
अथवा तीन प्रकारके सब जीव कहे हैं यथा परित्त, अपरित्त और नोपरित्त नो अपरित्त. अहो भगवन् !
परित्त कितने काल तक रहता है ? अहो गौतम ! परित्त के दो भेद काया परित्त. (अनंत काया
छेदकर प्रत्येक काया में आये हैं वे) और संसार परित्त. जो संसार को उत्तीर्ण हुए अहो भगवन् !
काया परित्त कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असं-
काल, यावत् असंख्यात लोक, अहो भगवन् ! संसार परित्त में कितना काल तक रहता है ?
! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम, अहो

रित्तेय संसार अपरित्ते ॥ काय अपरित्ते जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंत कालं, वणस्स तिकालो संसार अपरित्ते दुविहे प० तंजहा—अणादीएवा अपज्जवसिए, अणादीएवा सपज्जव सिए ॥ नो परित्ते नो अपरित्ते सादिएवा अपज्जवसिए ॥ कायपरित्तस्स अंतरं जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं वणस्सति कालो ॥ संसार परित्तस्स णत्थि अंतरं ॥ काय अपरित्तस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असंखेज्जकालं, पुढविकालो ॥ संसार अपरित्तस्स अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, णो परित्ता णो अपरित्तास्सवि णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा परित्ता, नो

भगवन्! अपरित्त अपरित्तपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम! इसके दो भेद कहे हैं, तद्यथा—काया अपरित्त और संसार अपरित्त काया अपरित्त में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंतकाल, वनस्पतिवत् और संसार अपरित्त के दो भेद अनादि अपर्यवसित, और अनादि सपर्यवसित नो परित्त नो अपरित्त में सादि अपर्यवसित है, काया परित्तका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पतिकाल जितना. संसार परित्तका अंतर नहीं है काया अपरित्तका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल-पृथ्वीकाल जितना, संसार अपरित्त के अनादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है और अनादि सपर्यवसित का अंतर भी नहीं है, नो परित्त नो अपरित्त का भी अंतर नहीं है, अल्पाबहुत्व सब से थोड़े परित्त इस से नो परित्त नो अपरित्त

परित्ता नो अपरित्ता अनंतगुणा, अपरित्ता अणंतगुणा ॥ २ ॥ अहवा तिविहा सव्व
जीवा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा, नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा ॥ पज्जत्तएणं भंते!
पज्जत्तएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरो-
वमसयपुहुत्तं साइरेगं, अपज्जत्तगेणं भंते! अपज्जत्तए कालओ केवचिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ नो पज्जत्तए नो अपज्जत्तए
सादिए अपज्जवसिए ॥ पज्जत्तगस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतो
मुहुत्तं ॥ अपज्जत्तगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरावम सयपुहुत्तं सातिरेगं,
तइयस्स णत्थि अंतरं॥अप्पाबहुं—सव्वत्थोवा नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा

इस से अपरित्त अनंतगुने ॥ २ ॥ भी और तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं, पर्याप्त, अपर्याप्त और नो पर्याप्त
नो अपर्याप्त. अहो भगवन्! पर्याप्त पर्याप्तपने कितना काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त
उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागरोपम से कुछ अधिक. अहो भगवन्! अपर्याप्त अपर्याप्तपने कितना काल तक
रहे? अहो गौतम! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. ना पर्याप्त नो अपर्याप्त (सिद्ध) का सादि अपर्यवसित है
पर्याप्त का अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अपर्याप्त का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक
सौ सागरोपम, और ना पर्याप्त ना अपर्याप्त का अंतर नहीं है। अल्पाबहुत्व—सब से थोड़े नो पर्याप्त

थावरा ॥ तसेणं भंते ! तसेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवम सहस्साइं साइरेगाइं, थावरस्स संचिट्ठणा वणस्सतिकालो, नो
उक्कोसेणं दो सागरोवम सहस्साइं साइरेगाइं ॥ तसस्स अंतरं वणस्सतिकालो, थावरस्स अंतरं तस-
तसा नो थावरा सालीण अवज्जवसीण ॥ तसस्स अंतरं वणस्सतिकालो, थावरस्स अंतरं तस-
कालो, नत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा तसा, णो तसा णो
थावरा अणंतगुणा, थावरा अणंतगुणा, ॥ सेत्तं तिविहा सव्व जीवा पण्णत्ता ॥ * ॥
सव्व जीवा णं एगं सामइयं सव्व जीवा पण्णत्ता, ते एवं माहंसु तंजहा—
मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी, अजोगी ॥ मणजोगीणं भंते ! मणजोगित्ति का-
लओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अंतो मुहुत्तं, एवं

त्रस का जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक दो हजार सागरोपम. स्थावर की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वन-
स्पति काल जितनी. त्रस का अंतर वनस्पति काल जितना, स्थावर का
अंतर त्रस के काल जितना और त्रस का स्थावर का अंतर नहीं है. अल्पाबहुत्व-सब से थोडे त्रस,
इस से त्रस स्थावर अनन्तगुने. यों तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं ॥(:)॥
सब जीव चार प्रकार के सब जीव कहे हैं व इस प्रकार कहते हैं यथा-मन योगी, वचन योगी, काया
योगी और अयोगी अहो भगवन् ! मन योगी मन योगीपने कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य

वि, काया जोगी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणइस्सइ कालो, अजोगी सातीए अपज्जवसिए ॥ मणजोगीस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, तहेव वयजोगिस्सवि, कायजोगीस्स—जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण अंतोमुहुत्त, अजोगीस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा मणजोगी, वइजोगी असंखेज्जगुणा, अजोगी अणंतगुणा, कायजोगी अणतगुणा ॥ १ ॥ अहवा चउव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुसकवेयगा, अवेयगा ॥ इत्थि वेयणं भंते ! इत्थिवेयति कालं केवंचिरं होई ?

समय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त ऐसे ही वचन योगी का जानना काया योगी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट स्पति जितना काल जानना अयोगी सादि अपर्यवसित है मन योगी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट स्पति के काल जितना, तैसे ही वचन योगी का जानना काया योगी का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंत-, अयोगी का अंतर नहीं है अल्पाबहुत्व—सब से थोडे मन योगी, इस से वचन योगी असंख्यगुणे, इस से अयोगी अनतगुणे, इस से काया योगी

उक्कोसेण वणस्सतिकालो, तहेव वयजोगिस्सवि, कायजोगिस्स—जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, अजोगिस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा मणजोगी, वइजोगी असंखेज्जगुणा, अजोगी अणंतगुणा, कायजोगी अणंतगुणा ॥ १ ॥ अहवा चउव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसकवेयगा, अवेयगा ॥ इत्थि वेयणं भंते ! इत्थिवेयति कालं केवंचिरं होई ?

एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. ऐसे ही वचन योगी का जानना. काया योगी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति जितना काल जानना. अयोगी सादि अपर्यवसित है. मन योगी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, तैसे ही वचन योगी का जानना. काया योगी का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अयोगी का अंतर नहीं है. अल्पाबहुत्व—सब से थोडे मन योगी, इस से वचन योगी असंख्यातगुने, इस से अयोगी अनंतगुने, इस से काया योगी अनंतगुने ॥ १ ॥ अथवा सब जीव के चार भेद कहे हैं, तद्यथा—स्त्री वेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी. और अवेदी. अहो भगवन्! स्त्री वेदी

नपुंसगवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं, अवेदगो जहा लोभो ॥ अप्पाबहुय-सव्वत्थोवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, णपुंसगवेदगा अणंतगुणा ॥ २ ॥ अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी केवलीदंसणी ॥ चक्खुदंसणीणं भंते ! चक्खुदंसणीत्तिकालओ केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं, अचक्खुदंसणी दुविहे पण्णत्ते तंजहा- अणादीएवा अपज्जवसिए, अणादीएवा सपज्जवसिए ओहिदंसणस्स एक्कंसमयं उक्कोसेणं दो छावट्ठीओ सागरोवमाणं सातिरेगाओ, केवलदंसणी साईए अपज्जवसिए, ॥ चक्खुदंसणिस्स अंतरं

भावं

सो सागरो पव अवेदी के दो भेद सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित. इस में से सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त ॥ अल्पा बहुत्वा सबसे थोडे पुरुष वेदी, सो वेदी संख्यातगुने, अवेदी अनंतगुने और नपुंसकवेदी अनंतगुने ॥२॥अथवा सब जीव के चार भेद कहे हैं चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी, अवधीदर्शनी और केवल दर्शनी अहो भगवन्! चक्षुदर्शनी चक्षुदर्शनी पने कितना काल रहे ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम से कुछ अधिक अचक्षुदर्शनी के दो भेद अनादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित

अहण्णेणं अंतमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, नो संजय नो असंजय नो संजयासंजय सादिए अपज्जवसिए, संजयस्स संजयासंजयस्स दोण्हवि अंतरं जहण्णेणं अंतमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं, असंजयस्स णादि दुवे णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ चउत्थस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहुं--सव्वत्थोवा संजया संजया संजया असंखेज्जगुणा, नो संजया नो असंजया नो संजय संजया अणंतगुणा असंजया अणंतगुणा ॥ सेत चउव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता ॥ * ॥ *

संयत का जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त, असंयतों का अनादि अनन्त जैसे कहना. संयतासंयतों का जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वकोटि नोसंयतनोअसंयत नोसंयतासंयत का सादि अपर्यवसित. संयत और संयतासंयत का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनन्त काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम. असंयत के अन्तर दो भांगे का अन्तर नहीं है और सादि सपर्यवसित का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटि, थोड़ा का अन्तर नहीं है अल्पबहुत्व सब से थोड़ा संयत, इस से संयतासंयत असंख्यात गुना, नो संयत नोअसंयत नो संयतासंयत अनन्तगुना. इस से असंयत अनन्तगुना. यों चार प्रकारके सब जीवों

सूत्र

उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त॥अकसाइ दुविहा जहा हेट्ठा,कोहकसाई माणकसाई मायाकसाईण भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कंसमयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, लोभकसायिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अकसाई तहेव जहा हेट्ठा ॥ अप्पाबहु-सव्वत्थोवा अकसाई, माणकसाइ तहेव अणंतगुणा, कोह माया लोभे विसेसाहिया मुणेयव्वा॥ सेत्त पचव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता ॥ तत्थ जे ते एव माहंसु छव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता ते एव माहंसु तंजहा-एगिंदिया,

अर्थ

मान कषायी, माया कषायी, लोभ कषायी और अकषायी, क्रोध, मान और माया कषायी की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त लोभ कषायी जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. अकषायी के दो भेद पूर्ववत्. क्रोध मान व माया कषायी का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त लोभ कषायी का अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त और अकषायी का पूर्ववत् जानना, अल्पाबहुत्व-सब से थोडे अकषायी. इस से मान कषायी अनंतगुने, इस से क्रोध कषायी विशेषाधिक, इस से माया कषायी विशेषाधिक, इस से लोभ कषायी विशेषाधिक. यह पांच प्रकार के जीव की प्ररूपणा हुई. ॥

अब छ प्रकार के जीव की प्ररूपणा करते हैं --

ओ इस प्रकार है—

दिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया, अणिंदिया ॥ संचिट्ठणंतरं जहा हेट्ठा ॥ अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा ॥ अहवा छव्विहा सव्व जीव पण्णत्ता तंजहा-ओरालिय सरीरी, वेउव्विय सरीरी, आहारग सरीरी, तेयग सरीरी कम्मग सरीरी, असरीरी ॥ ओरालिय सरीरीणं भंते ! कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं दुसमे ऊणं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग, वेउव्विय सरीरी जहण्णेणं एक्कं

अर्थ

पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय इन की स्थिति पूर्ववत् और अंतर भी पूर्ववत्. अल्पबहुत्व में सब से थोड़े पंचेन्द्रिय इस से चतुरिन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से अनिन्द्रिय अनन्तगुणे, इस से एकेन्द्रिय अनंतगुणे अथवा छ प्रकार के सब जीव कहे हैं औदारिक शरीरी, वैक्रिय शरीरी, आहारक शरीरी, तैजस शरीरी, कार्माण शरीरी और अशरीरी. अहो भगवन् ! औदारिक शरीरी कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दो समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट असंख्यात काल यावत् अगुल के असंख्यातवें भाग आकाश प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी. वैक्रिय शरीरी जघन्य एक समय उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, आहारक शरीरी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त

सुक्कलेसा, अलेसा ॥ कण्हलेसाणं भंते ! कण्हलेसेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तं मब्भहियाइं, णीललेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दससागरोवमाइ पलिओवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं, काउलेसेणं भंते ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं, पलिउवमस्स असखेज्जति भागमब्भहियाइ ॥ तेउलेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोण्णिसागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग मब्भहिया पम्हलेसेणं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्त

अर्थ

लेशी, शुक्ल लेशी और अलेशी. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कृष्ण लेश्यापने कितना रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, नील लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेजो लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, पद्म लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक,

सुक्कलेसा, अलेसा ॥ कण्हलेसाणं भंते ! कण्हलेसेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तं मब्भहियाइं, णीललेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दससागरोवमाइ पलिओवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं, काउलेसेणं भंते ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं, पलिउवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइ ॥ तेउलेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोण्णिसागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग मब्भहेया पम्हलेसेणं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्त

अर्थ

लेशी, शुक्ल लेशी और अलेशी. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कृष्ण लेश्यापने कितना रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, नील लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेजो लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक. पद्म लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक शुक्ल लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त

सूत्र सुक्कलेसा, अलेसा ॥ कण्हलेसाणं भंते ! कण्हलेसेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तं मब्भहियाइं, णीललेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं, काउलेसेणं भंते ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं, पलिउवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं ॥ तेउलेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोण्णिसागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग मब्भहिया पम्हलेसेणं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्त

अर्थ लेशी, शुक्ल लेशी और अलेशी. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कृष्ण लेश्यापने कितना रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, नील लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेजो लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक. पद्म लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक शुक्ल लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीस सागरोपम और

दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणीणं भंते ! तिरिक्खजोणिणीणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पणपन्नतिकालो, ॥ ओवमाइं पुव्वकोडि पहुत्त मब्भहियाइं. एवं मणुस्स, देवे जहा नेरतिए, देवीणं भंते! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं ॥ निंदणं भंते ! निंदंति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥ नेरइयस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पणपन्नतिकालो ॥ तिरिक्खजोणियस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !

उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और पूर्व क्रोड अधिक. देव की जघन्य और मनुष्यनी का जानना देव की नारकी जैसे कहना. देवीकी स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की और सिद्ध सादि अपर्यवसित जानना. अहो भगवन् ! नारकी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल. वनस्पति जितना. तिर्यंच का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम सो सागरोपम से कुछ अधिक. तिर्यंचणी का अंतर

[illegible] २ जाव विसेसाहिया [illegible] सव्वत्थोवा सुक्कलेसा पद्मलेसा संखेज्जगुणा, तेउलेसा संखेज्जगुणा, काउलेसा अणंतगुणा, कप्पोतलेसा अणंतगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा [illegible] सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ (.) ॥ (:)

[illegible] एव माहसु अट्ठावइ सव्वजीवा पण्णत्ता तेण एव माहसु तंजहा— [illegible] तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ कालओण भंते ! जेरइयाणं कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेणं

[illegible] इस से कापोत [illegible], इस से [illegible] लेश्या विशेषाधिक और इस से कृष्ण लेश्या विशेषाधिक. यों सात प्रकार के [illegible] के भेद हुए

(:) (:) (:)

अब ऐसा कहते हैं कि आठ प्रकार के सब जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं. यथा—नैरयिक, तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी और सिद्ध. अहो भगवन् ! नैरयिक की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! [illegible] सागरोपम. तिर्यंच की स्थिति [illegible]

[illegible]मवासमहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिएणं भंते ! तिरिक्खजोणित्ति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फतिकालो, ॥ तिरिक्खजोणिणीणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पहत्तमब्भहियाइं. एवं मणुस्स, देवे जहा नेरतिए, देवीणं भंते! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्ने पलिओवमाइं ॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्धे त्ति ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ नेरइयस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फइकालो ॥ तिरिक्खजोणियस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !

[illegible] की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और पूर्व क्रोड [illegible] जघन्य और उत्कृष्ट [illegible] का जानना देव की नारकी जैसे कहना. देवीकी स्थिति जघन्य [illegible] की और सिद्ध सादि अपर्यवसित जानना. अहो भगवन् ! नारकी का [illegible] अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल. वनस्पति जितना. तिर्यंच का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम सो सागरोपम से कुछ अधिक. तिर्यंचणी का अंतर

[illegible] नीलेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा अलेस्साणय कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा संखेज्जगुणा, तेउलेसा संखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, कालेसा अणंतगुणा नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया सत्त सव्वाविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ (:) ॥ (:)

तत्थण जे ते एवमाहंसु अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तेणं एवमाहंसु तंजहा— णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइयत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं

[illegible] से असंख्यातगुणे, तेजो लेश्यावाले से असंख्यातगुणे, इस से अलेशी अनंतगुणे, इस से कापोत लेशी अनंतगुणे, इस से नील लेशी विशेषाधिक और इस से कृष्ण लेशी विशेषाधिक. यों सात प्रकार के सब जीव के भेद हुए (:) (:) (:)

अब एसा कहते हैं कि आठ प्रकार के सब जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं. तथा—नैरयिक, तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी और सिद्ध कहो भगवन् ! नैरयिक की कितनी स्थिति कही ? हे गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम. तिर्यंच की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त

हण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सयपहुत्तं सातिरेगं, तिरिक्खजोणिणीणं भंते ! अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फइ कालो, एवं मणुसस्सवि, मणुस्सीएवि, देवस्सवि, देवीओवि॥ सिद्धस्सणं भंते ! अंतर?सादिस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतरं॥एतेसिणं भंते!नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं, तिरिक्ख जोणिणीण, मणुस्साणं, मणुस्सीणं, देवाणं, देवीणं, सिद्धाणय, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्ज गुणीओ सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ १ ॥ अहवा अट्ठविहा

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी का जानना. सिद्ध का सादि अपर्यवसित भांगा है. उस का अंतर नहीं है. अहो भगवन् ! इन नैरयिक, तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी और सिद्ध इन में कौन किस से अल्पबहुत्व, तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्यणी. इस से मनुष्य असंख्यातगुने, इस से नैरयिक असंख्यातगुने, इस से तिर्यंचणी असंख्यातगुनी, इस से देव असंख्यातगुने, इससे देवी संख्यातगुनी, इस से सिद्ध अनंतगुने और

भंते ! मतिअण्णाणीति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! मतिअण्णाणी तिविहे पण्णत्ते तंजहा—अणादिए वा अपज्जवसिए, अणादिए वा सपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थणं जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं सुयणाणी एवं चेव, विभंगणाणीणं भंते ! विभंगणाणीति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥ आभिणिबोहियणाणिस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतंकालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं, एवं सुयणाणिस्सवि, ओहिणाणिस्सवि,

सपर्यवसित और सादि सपर्यवसित. इन में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त. ऐसे ही श्रुत अज्ञानी का जानना. विभंग ज्ञानी की स्थिति एक समय उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और देश ऊणा क्रोड पूर्व अधिक. अहो भगवन् आभिनिबोधिक ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त्त में कुछ कम, ऐसे ही श्रुत ज्ञानी का जानना. ऐसे ही अवधि ज्ञानी मनःपर्यव ज्ञानी का अंतर जानना. केवल ज्ञानी का सादि अपर्यवसित भांगा होता है. इस का

धोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसाहिया, विभंगणाणी असंखेज्जगुणा, केवलणाणी अणंतगुणा, मतिअण्णाणी सुयअण्णाणि दोवि तुल्ला अणंतगुणा ॥ सेत्त अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ * ॥ * * *

सत्थम जे से एव माहसु णवविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तेणं एव माहंसु तंजहा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, णेरतिया, पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुसा देवा सिद्धा ॥ एगिंदिएण भंते ! एगिंदिएति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं वणस्सति काला ॥ बेइंदिएणं भंते ! बेइंदिएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं असंखज्ज काल,

अर्थ

तुल्य विशेषाधिक, इस से विभंग ज्ञानी असंख्यातगुने, इस से केवल ज्ञानी अनंतगुने, और इस से मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी परस्पर तुल्य अनंतगुने इस तरह आठ प्रकार के सब जीव की प्ररूपणा हुई. ॥ ०

अब नव प्रकार के सब जीव कहते हैं वे ऐसे कहते है, तद्यथा-एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव और सिद्ध! अहो भगवन्! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपने कितना काल रहे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय बेइन्द्रियपने रहेतो कितना काल रहे ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल. ऐसे ही त्रीन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय का जानना. अहो

अंतरं मुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फइकालो, एवं तेइंदियस्सवि, चउरिंदियस्सवि, णेरइयस्सावि पचेंदिय तिरिक्खजोणियस्सवि, मणूस्सवि देवस्सवि, सव्वेसिं अंतरं भाणियव्वं ॥ सिद्धस्सण भंते ! अंतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं ॥ एतेसिण भंते ! एगिंदियाणं बेइंदियाणं तइंदियाण चउरिंदयाण नेरतियाणं, पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणं, मणूसाण, देवाणं, सिद्धाण, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणूसा, णेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, पचेंदिय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, सिद्धा अणंत

अर्थ

द्वीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, देव यों सब का अंतर जानना. अहो भगवन् ! सिद्ध का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित होने से अंतर नहीं है. अहो भगवन् ! इन एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, देव और सिद्ध इन में कौन किस से अल्पबहुत्व, तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य, इस से नैरयिक असंख्यातगुने, इस से देव असंख्यातगुने, इस से तिर्यंच पंचेन्द्रिय असंख्यातगुने, इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से सिद्ध अनंतगुने,

खुड्डागं भवग्गहणं एगं समयऊणं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो, पढम समय मणुसस्सणं भंते ! मणुसंति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं वि एगं समयं, अपढमसमय मणुसेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डागं भवग्गहणं समयऊणं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ देवे जहा नेरइए ॥ सिद्धेणं भंते ! सिद्धेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ पढम समय णेरइयस्सणं भंते ! अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणप्फतिकालो ॥ अपढम समय णेरइयस्सणं भंते ! अंतर जहण्णेणं अंतो

काल जितना. प्रथम समय के मनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के मनुष्य की जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक. देव की नारकी जैसे कहना, अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित रहे. अहो भगवन् ! प्रथम समय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना. अप्रथम समय नैरयिकका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना. प्रथम समय के तिर्यंचका कितना अंतर ? अहो गौतम !

कालं, एवं चउरिंदियेवि ॥ पंचेंदिएणं भंते ! पंचेंदियेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं, अणिंदिएणं भंते ! अणिंदिएत्ति ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ पुढविकाइयस्सणं भंते ! अंतरंकालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वण्णप्फइकालो, एवं-आउ-तेऊ-वाउकाइयस्स ॥ वणप्फतिकाइयस्सणं भंते ! अंतरं कालतो जाव पुढविकाइयस्स संचिट्ठणा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय, पंचेंदियाणं एतेसिं चउण्हंपि अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फतिकालो,

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम और अनेन्द्रिय सादि अपर्यवसित हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कायाका कितना अंतर है ! अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वणस्पति काल. ऐसे ही अप् तेउ, और वायुकायाका जानना. वणस्पति कायाका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पृथ्वी काया की संचिठना जितना. द्विन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय इन चारों का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वणस्पति काल

सूत्र

अपढम समयमणुस्सा, पढमसमयदेवा, अपढमसमयदेवा, पढमसमयसिद्धा अपढम-समयसिद्धा ॥ पढमसमय नेरइयाणं भंते ! पढमसमयनेरइय कालओ केवचिरं होइ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेण एक्कंसमयं, अपढम समय नेरइयाणं भंते ! अपढम समय नेरइयति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइ समयऊणाइ, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयऊणाइं ॥ पढम समय तिरिक्खजोणिएणं भंते ! पढम समय तिरिक्खजोणियति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं एक्क समयं, अपढम समय तिरिक्ख जोणिएणं भंते ! अपढम समय तिरिक्ख जोणिएति कालओ केवचिरं

अर्थ

अप्रथम समय के देव, प्रथम समय के सिद्ध और अप्रथम समय के सिद्ध. अहो भगवन् ! प्रथम समय के नैरयिक की कितनी भव स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय. अहो भगवन् ! अप्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिकपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट एक समय कम तेत्तीस सागरोपम. अहो भगवन् ! प्रथम समय के तिर्यंच प्रथम समय के तिर्यंचपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय. अप्रथम समय के तिर्यंच अप्रथम समय के तिर्यंचपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम

वास सहस्साइं अंतोमुहुत्तं मब्भाहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सति कालो, अपढम समय णेरइयाणं भंते ! अंतर कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण वणप्फइकालो ॥ पढम समयं तिरिक्खजोणियाणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्सणं भंते ? अंतरं कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहणाइ समयाहियं, उक्कोसेणं सागरोवम सय पुहुत्तं सातिरेग ॥ पढम समय मणुसस्सण भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा! जहण्णेण दो खुड्डागं भवग्गहणं समयऊणाइं, उक्कोसेणं वणप्फतिकालो, अपढमसमय

जघन्य दश हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट वनस्पति काल. अप्रथम समय नैरयिक का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल. प्रथम समय तिर्यंच का अंतर जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल. अप्रथम समय तिर्यंच का अंतर जघन्य एक समय अधिक दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम. अहो भगवन् ! प्रथम समय के मनुष्य का अंतर कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल. अप्रथम समय के मनुष्य का अंतर जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल. देव का अंतर नैरयिक जैसे जानना.

सूत्र

पढम समय तिरिक्ख जोणिया असंखेज्जगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! अपढम-समय णेरइयाण अपढम समय तिरिक्ख जोणियाण, जाव अपढम समय सिद्धाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अपढम समय मणूसा, अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयसिद्धा अणंतगुणा, अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! पढमसमय णेरतियाण अपढमसमय णेरइयाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय णेरइया, अपढमसमय नेरतिया असंखेज्जगुणा

अर्थ

से थोडे अप्रथम समय मनुष्य इस से नैरयिक असंख्यातगुणा, इस से देव असंख्यातगुणा, इस से सिद्ध अनंतगुणा और इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनंतगुणा अहो भगवन् ! प्रथम समय के नैरयिक और अप्रथम समय के नैरयिक इन में कौन अधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के नैरयिक इस से अप्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन प्रथम समय के तिर्यंच और अप्रथम समय के तिर्यंच में कौन कम ज्यादे है? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के

सूत्र

एतासिणं भंते ! पढमसमय तिरिक्खजोणियाणं अपढमसमय तिरिक्खजोणियाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय तिरिक्खजोणिया अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! पढमसमय मणूसाणं अपढमसमय मणूसाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय मणूसा अपढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा ॥ जहा मणूसा तहा देवावि ॥ एतेसिणं भंते ! पढमसमय सिद्धाणं अपढमसमय सिद्धाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा अपढम-

अर्थ

अप्रथम समय के मनुष्य में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के मनुष्य, इस से अप्रथम समय के मनुष्य असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! प्रथम समय के और अप्रथम समय के देव में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के देव, इससे अप्रथम समय के देव असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! प्रथम और अप्रथम समय के सिद्ध में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम! सब से थोडे प्रथम समय के सिद्ध इस से अप्रथम समय के सिद्ध अनंतगुने. अहो भगवन् !

सुधारक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री मनोहर ऋषिजी

इति चतुर्दश

॥ जीवाभिगम सूत्रं समाप्तं ॥

वीर संवत २४४२ अषाढ शुदी ११ वार गुरु

राजराजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसा

इति चतुर्दश

॥ जीवाभिगम सूत्रं समाप्तं ॥

वीर संवत २४४५ अषाढ सुदी १२ वार गुरु

शास्त्रोद्धार प्रारंभ वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति

जीवाभिगम सूत्र

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति वीराब्द २४४६ विजयादशमी

अट्ठो से बहूइं उप्पलाइं, कक्कोडग पभाइं सेसं तंचेव णवरं कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एवंतंचेव सव्व कइलासवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेणं आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेणं. कइलासेवि एवंचेव णवरं दाहिण पच्चत्थिमेणं कइलासवि रायहाणिं, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरुत्तरेणं रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिणं भंते ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं लवण समुद्दं बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता

उत्पल वगैरह होते हैं. कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना. इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है. कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना. परंतु यहां अग्नि कोण कहना. इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना. कैलासका भी वैसेही जानना. परंतु यहां नैऋत्य कोण में कहना. और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना. अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परंतु वायव्य कोण में कहना. और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना. चारों का प्रमाण समान जानना. सब रत्नमय हैं. ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नायक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

तत्थ चउव्विहे सामण्णिए जाव ठिइए ॥ कहिं णं भंते ! मणोसिलगाणं देवाणं पण्णत्ताओ मणोसिलगाणं रायहाणी ? गोयमा ! दगमीणस्स आवास पव्वयस्स उत्तरेणं तिरियं असंखेज्जं जाव अण्णंमि लवणे दगमणोसिलगाणं रायहाणी पण्णत्ता, तंचेव पमाणं जाव मणोसिलए देवे कयणकायए फलिहमया देवंगा पासायाणं अणुवेलंधर राइस पवत्ता होंति रयणमया ॥ १४ ॥ कहिं णं भंते ! अणुवेलंधर पासायाणं पण्णत्ता ? गोयमा ! चउण्हं अणुवेलंधर पासायाणं पण्णत्ता तंजहा-कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ तेसिणं भंते ! चउण्हं

आवास है यावत् तिर्यक् है. भगवन् ! मनःशिलक देवों की मनःशिलक राजधानी कहां है ? गौतम ! उदकमीनक आवास पर्वत से उत्तर में तिर्यक् असंख्यात द्वीप समुद्र के बाद दूसरे लवण समुद्र में मनःशिलक उदक राजधानी कही है। उस में मनःशिलक देव रहता है। पहला आवास पर्वत कनकमय है, दूसरा आवास पर्वत अंक रत्नमय, तीसरा आवास पर्वत चांदी और चौथा आवास पर्वत स्फटिक रत्नमय है ॥ २४ ॥ भगवन् ! अनुवेलंधर आवास कहां कहे हैं ? गौतम ! अनुवेलंधर नागराज पर कहे हैं यथा-१ कर्कोटक, २ कर्दमक, ३ कै

सूत्र

दक्खिणेणं, सिवगादगभासस्स सेणं तंचेव ॥ २२ ॥ कहिणं भंते ! संखस्स वेलंधर णागरायस्स संखणामं आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं बायालीसं जोयणं एत्थणं संखस्स वेलंधर संखणामं आवास पव्वते तंचेव पमाणं नवरं सव्वरययामये अच्छे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेणं वणसंडे जाव अट्ठ बहूउ खुड्डा खुड्डियाओं जाव बहुइं उप्पलाइं संखवण्णाइं संखप्पभाइं संखवण्णप्पभाइं संखे तत्थ देवे महड्ढिए जाव रायहाणी

अर्थ

पर्वत नाम कहा. इन की राजधानी दगभास पर्वत से दक्षिण दिशा में है. शेष वैसे ही जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! शंख नामक वेलंधर नागराजा का शंख नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शंख नामक वेलंधर नाग राजा का शंख नामक आवास पर्वत कहा है. इस का प्रमाण गोस्तूभ जैसे जानना. परंतु यह सब रूपामय है. निर्मल यावत् प्रतिरूप है. इस की आसपास एक २ पद्मवर वेदिका व वन खण्ड है. अहो भगवन् ! शंख आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बावडियों प्रमुख में यावत् शंख जैसे वर्ण वाले बहुत कमल प्रमुख उत्पन्न होते हैं. शंख जैसे लावण्य.

पमाणं तहेव सव्वं ॥ २१ ॥ कहिणं भंते ! सिवगस्स वेलंधर णागरायस्स दगभा-
सेणामं आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं
लवणसमुद्दं बायालीसं जोयण सहस्साणि उगाहित्ता एत्थणं सिवगस्स वेलंधर
णागरायस्स दगभासे नामं आवास पव्वते पण्णत्ते, तचेव पमाण जं गोथूभस्स
णवरि सव्वं अंकामये अच्छे जाव पडिरूवे जाव अच्छा भाणियव्वो ॥ गोयमा !
दगभासेणं आवास पव्वये लवण समुद्दं अट्ठ जोयणिये खत्तं उदयं सव्वतो समताओ
भासति उज्जोवेति तवेति पभासेति सिवयं एत्थ देवे महिड्ढिये जाव रायहाणी से

वगैरह सब वक्तव्यता विजया राजधानी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शिव नामक वेलंधर नाग राजा का दगभास पर्वत कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शिव नामक वेलंधर नाग राजा का दगभास आवास पर्वत कहा है. इस का सब कथन गोस्तूभ आवास पर्वत जैसे कहना. विशेष में यह पर्वत सब अंक-रत्नमय स्वच्छ यावत् सब अर्थ कहना. अहो भगवन् ! दगभास आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! दगभास आवास पर्वत लवण समुद्र के पानी में चारों ओर दीप्ति करता है, उद्योत करता है, तपता है, कांति बढ़ाता है और वहां शिव नामक महर्द्धिक देव रहता है, इस लिये इस का दगभास

सूत्र

एवं वुच्चइ गोथूभे आवास पव्वते ? गोयमा ! गोथूभ आवास पव्वते तत्थ२ देसे २ तहिं २ बहुओ खड्डा खड्डियाओ जाव गोथूभ वण्णाइं तहेव जाव गोथूभे, तत्थ देवे महिड्ढिए जाव पलिओवमठितीये परिवसति, सेणं तत्थ चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं जाव गोथूभस्स आवास पव्वतस्स गोथूभाये रायहाणीए जाव विहरति ॥ से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोथूभस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमेणं तिरिय मसंखेज्जे दीव समुद्दे वीतीवतिता अण्णमि लवण समुद्दे तंचेव

अर्थ

आवास पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी बड़ी बावड़ियाँ हैं यावत् गोस्तूभ के वर्णजैसे बहुत कमल हैं. यों सब पूर्ववत् कहना यावत् वहां गोस्तूभ नामक देवता रहता है. वह महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाला है. वह वहां चार हजार सामानिक यावत् गोस्तूभ आवास पर्वत व गोस्तूभा राजधानी का अधिपतिपना करता हुवा विचरता है. इसलिये इस का नाम गोस्तूभ आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राजधानी कहां है ? अहो गौतम ! गोस्तूभ आवास पर्वत से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राजधानी कही है. इन का प्रमाण

उवरिं एगं जोयणसहस्सं निण्णाएहयाले जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे, मज्झेसंखित्ते, उवरिं तणुए, गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्व कणगामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेणय वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ ॥ गोथूभस्सणं आवास पव्वयस्स उवरिं बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयंति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स एत्थणं एगे महं पासायवडेंसए पण्णत्ते, बावट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तच्चेव पमाणं अट्ठ आयामविक्खंभेणं वण्णओ जाव सीहासणं सपरिवारं ॥ १९ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

हमार तीनसो इकतालीस योजन के कुछ न्यून की परिधि है [illegible] संकीर्ण है. गोपुच्छ संस्थान वाला है. सब कनकमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है. उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है. दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना. गोस्तूभ आवास पर्वत पर बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् वहां देवता बैठते हैं. उस रमणीय भूमिभाग के बीच में एक बड़ा प्रासादावतंसक कहा है. बहत्तर योजन का ऊंचा व २५० योजन का लम्बा चौड़ा कहा है. यावत् परिवार सहित सिंहासन कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ आवास पर्वत क्यों कहा ? अहो गौतम ! गोस्तूभ

सूत्र

पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पुरत्थिमेणं लवणे समुद्दं बायालीसं जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं गोथूभस्स वेलंधर णागरायस्स गोथूभे णामं आवासपव्वते पण्णत्ते, सत्तरस इक्कवीसाइं जोयण सताइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि तीसे जोयण सते कोसं च उव्वेहेणं मूले दस बावीसे जोयणसते आयाम विक्खंभेणं मज्झेमज्झे सत्तवीसे जोयण सते आयामविक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयण सए आयामविक्खंभेणं, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय बत्तीसुत्तरे जोयण सए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं मज्झे दो जोयण सहस्साइं दोण्णिय चुलसीति जोयण सते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण,

अर्थ

कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत से पूर्व में लवणसमुद्र से ४२ हजार योजन अवगाहकर आगे वहां गोस्तुभ वेलंधर नागराजा का गोस्तुभ नामक आवास पर्वत कहा है वह सत्रह सौ इक्कीस योजन का ऊंचा चारसो सत्तावीस योजन गहरा (पानी में) है. मूल में एक हजार बावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है. बीच में सात सौ सत्तावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है और उपर चारसो चौबीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है. मूलमें तीन हजार दोसौ बत्तीस योजन में कुछ कम की परिधि है, बीच में दो हजार दोसौ चौरासी योजन से कुछ कम की परिधि है. और ऊपर एक

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अतिरेगं २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उदमंतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरंतेसु पातालेसु हायति से तेणट्ठेणं गोयमा ! लवणं सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरेगं वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाणं भंते ! केवइयं चक्कवाल विक्खंभेणं कवइयं अतिरेगं वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाणं दसजोयणसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं देसूणं अद्धजोयणं अतिरेगं वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिभागसाहस्सीओ अब्भंतरियं वेलंधारेंति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेंति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयंधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीसं नागसाहस्सीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके उचां उछलता है, वह वायु से पूरता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुछ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं. और किसने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते है और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

अट्ठप चुलसिया पातालसता भवंति तिमक्खाया ॥ १३ ॥ तेसिं महापातालाणं खुड्डाग पातालाणय हिट्ठिम मज्झिलेसुतिभागेसु बहवे उराला वाया संसेयंति समुच्छंति पतंति वेयंति कंपंति खुब्भंति घट्टंति फंदंति तंतं भाव परिणमंति, जेण उदयउस्सा-हिज्जति ॥ जत्थाणं तेसिं खुड्डा पायालाणं महापायालाणं हेट्ठिले मज्झिलेसु तिभागेसु बहवे उरालिय वाया संसेयंति संमुच्छंति एयंति वेयंति कपंति खुब्भंति घट्टंति फंदंति तंतंभावं परिणमंति, तयाणं से उदये उण्णाहिज्जति २, जयाणं ते खुड्डा पायालाणं महापायालाणय

सब मीलकर जम्बूद्वीप में सात हजार आठसो चौरासी पाताल कलश कहे हैं ÷ ॥ १३ ॥ जब पाताल कलश के छोटे पाताल कलश में बीच का व नीचे का विभाग में उर्ध्वगमन स्वभाव वाले वायु काय उत्पन्न होते हैं. मूर्च्छित होते हैं, हिलते हैं, चलते हैं, कंपित होते हैं, क्षुब्ध होते हैं व संघट्ट होते हैं, परस्पर संघर्षण होते हैं, और उस भाव में परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उछलता है. और जब वह कलश के

÷ चारों बडे कलश के मध्य में अलग २ छोटे कलशों की नव लड है. प्रथम लड में २१५, दूसरी में २१६ से २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलश की नवमी लड है. इसी तरह चारों कलश की आसपास लड कहना. यह सब लडके कलश सामिल करने से पूर्वोक्त संख्या होती है.

सूत्र

पायालाणं कुड्डा सव्वत्थसमा दसजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, सव्वपइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तत्थणं बहवे जीवाय पोग्गलाय जाव असासयावि पच्चेयं २ अद्धपलिओवमठितियाहिं देवेताहिं परिग्गहिया ॥ तेसिणं खुड्डग पायालाणं ततोतिभागा पण्णत्ता तंजहा हेट्ठिल्लभागे मज्झिल्लभागे उवरिल्ले-भागे, तेणंतिभागा तिण्णि २ तेतिस जोयणसते तेजायणातिभागं च बाहल्लेण पण्णत्ता, तत्थणं जे से हेट्ठिल्ले भागे एत्थणं वाउयाए संचिट्ठति, मज्झिल्लेतिभाग वाउयाते आउयातेय उवरिल्ले आउयाए, एवामेव सव्वावरेणं लवण समुद्दे सत्त पायाल सहस्सा

अर्थ

होते २ उपर के मुख स्थान एकसो योजन के चौडे हैं. इन छोटे पाताल कलशकी ठिकरी सर्वत्र समान. दश योजन की जाडी है. सर्व वज्र रत्नमय स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप हैं. वहां बहुत जीव व पुद्गल आते हैं, उत्पन्न होते हैं चवते हैं. वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वतीत वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है, वहां आधे पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं. इन छोटे पाताल कलश के तीन विभाग किये हैं. उपर का, मध्य का व नीचे का. प्रत्येक भाग तीनसो तीतेसी योजन व एक योजन के तीन भाग मेंसे एकभाग का है. इस में से सब से नीचे के भाग में वायु है, मध्य भाग में वायु व पानी है और उपर के भागमें पानी है.

अर्थ

...भाग उवरिल्लतिभागे तेणं तिभागे तेवीसं २ जोयण सहस्सातिं तिण्णिय तेवीसे जोयणसये जोयणति भागंच बाहल्लेणं, तत्थणं जे से हेट्ठिल्लेभागे एत्थणं वायकायते संचिट्ठति, तत्थणं जे से मज्झिल्लेतिभागे एत्थणं वाउयाएय आउयाएय संचिट्ठंति तत्थणं जे से उवरिल्लेभागे एत्थण आउयाते संचिट्ठंति ॥ १२ ॥ अदुत्तरंचणं गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे २ बहवे खुड्डालिंजर सठाण संठिया खुड्डपायाला पण्णत्ता, तेणं खुड्डा पायाला एगमेग जोयणसहस्सं उवेहेणं मूले एगमेगं जोयणसतं विक्खंभेणं, मज्झेएगपदेसिया सेढीए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेणं, उप्पिं मुहमूले एगमेगं जोयणसतं विक्खंभेणं ॥ तेसिणं खुड्डा

प्रमंजन. इन पाताल कलशों के तीन भाग किये हैं. नीचे का भाग, मध्य का भाग व ऊपर का भाग. एक २ भाग तेवीस हजार तीन सो तेवीस योजन व एक योजन के तीन भाग में का एक भाग का जाडा है. उन में से नीचे के भाग में वायुकाय, बीच के भाग में वायुकाय व अप्काय साथ और ऊपर के भाग में मात्र अप्काय है ॥ १२ ॥ और भी अहो गौतम ! लवण समुद्र में बहुत छोटे मल्लिका के आकार वाले छोटे पाताल कलश हैं. वे एक हजार योजन के ऊंडे हैं. मूल में एक एक सौ योजन के चौडे हैं वहां से एक २ प्रदेश बढते २ मध्य में एक हजार योजन के चौडे है. वहां से एक प्रदेश कम

तहेव सव्वं एवं पुक्खरवरगाणं चंदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेदियंताओ पुक्खरवरसमुद्दं बारसजोयण सहस्साइं उग्गाहित्ता चंददीवा अण्णंमि पुक्खरवरदीवे रायहाणीओ तहेव एवं सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयंताओ पुक्खरोदं समुद्दं बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव सव्वं जाव रायहाणीउ दीवियाणं दीव समुद्दगाणं समुद्द चेव एगाणं अब्भंतर पासे एगाणं बाहिरपासे रायहाणीउ दीवियाणं दीवेसु समुद्दगाणं समुद्देसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगंतव्वा ॥ जंबूदीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखोयणंदी

चंद्रद्वीप पूर्वदिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है. सब समुद्र के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में हैं द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उन से आगे के समुद्र में हैं, और समुद्र के चंद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में हैं. उन की राजधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राजधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राजधानी पश्चिम दिशा में है. इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणिवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

अरुणवरे कुंडले रुयए आभरण वत्थगंधे उप्पल तिलयए पुढवी णिठरघणे वासधर दह णदीओ विजया वक्खार कप्पिंदा कुरु मंदिर मावासा कुडाणखत्त चंदसूराय एवं भाणियव्वं॥ ३४॥कहिणं भंते! देव दीवगाणं चंदाणं चंददीवाणामं दीवा पण्णत्ता? गोयमा देव दीवस्स देवोद समुद्दंवारस जोयणाइ उग्गाहित्ता तेणेव कमेणं पुरत्थिमिल्लाउ वेइयंताओ जाव रायहाणीओ सगाणंदीवाणं पुरत्थिमेणं देवोदं समुद्दं असंखेज्जाति जोयणसहस्साति, उग्गहित्ता एत्थणं देव दीवगाणं चंदाणं चंदाउ नाम रयिहाणातो

अर्थ समुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवर समुद्र, कुंडल द्वीप, कुंडल समुद्र, रुचक द्वीप, रुचक समुद्र, आभरण, वस्त्र, गंध, कमल, तिलक, पृथ्वी, निधान, रत्न, वर्षधर, द्रह, नदी, विजय, वक्षस्कार, बारह देवलोक, चौसठ इंद्र, देवकुरु, उत्तरकुरु, मेरु पर्वत, आवास पर्वत, शिखर, अट्ठाइस नक्षत्र, चंद्र व सूर्य इत्यादि उत्तम वस्तु के नामवाले असंख्यात द्वीप समुद्र कहे हैं ॥ ३४ ॥ अहो भगवन्! देवद्वीप के चंद्र का चंद्रद्वीप कहां कहा है? अहो गौतम! देव द्वीप की पूर्वदिशा की वेदिका के अंत से देवोदधि समुद्र में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां चंद्रमा का द्वीप कहा है, यावत् अपने द्वीप से पूर्व में देवोदे समुद्र में [illegible] कहा

पण्णत्ताउ सेसं तहेव देव दीवचंदा देवा२, पुव्वं सूराणवि णवरं पच्चत्थिमेहुत्ताओ वेदि-
यातातो पच्चत्थिमेणं च भाणियव्वो तीसे चेव समुद्दोकहिणं भंते! देव समुद्दगाणं चंदाणं
चंददीवा पण्णत्ता?गोयमा!देवोदगस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लातो वेतियतातो देवोदगं समुद्दं
पच्चत्थिमेणं बारस जोयण सहस्साइं तेणेव कमेण जाव रायहाणीउ सेसाणं दीवाणं
पच्चत्थिमेणं देवोदगं समुद्द असंखेज्जाइं जोयणसहस्साणि उग्गाहित्ता पुरत्थेण देवोदगस्स

सब वैसेही कहना. ऐसेही सूर्यका जानना विशेषमें पश्चिमकी वेदिकासे देवोदधि समुद्रमें पश्चिम में बारह हजार
योजन अवगाह कर जावे वहां सूर्य द्वीप है, वहां उन के द्वीप से पश्चिम दिशा में देवोदधि समुद्र में
असंख्यात हजार योजन अवगाह कर जावे वहां उन की राजधानी है. अहो भगवन्! देव समुद्र के
चंद्र का चंद्रद्वीप कहां कहा है? अहो गौतम! देवोदधि समुद्र की पूर्वदिशा की वेदिकासे
देवोदधि समुद्र के पश्चिम में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां देवोदधि समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप
कहा है इसी क्रम से राजधानी की पर्षदा कहना. अपने द्वीप से पश्चिम में देवोद समुद्र में असंख्यात
हजार योजन अवगाह कर जावे वहां उनकी चंद्राभिधान राजधानी है. यों सब जानना. ऐसेही सूर्यका कहना.
विशेषता यह है कि देवोदक से पश्चिम की वेदिका से देवोदक समुद्र के पूर्व में बारह हजार योजन जावे

चंदाण चंदाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं चेव सव्वं एवं सूराणवि णवरं देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियंताओ देवोदगं समुद्द पुरत्थिमेण बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता रायहाणीउ सयाणं २ पुरत्थिमेण समुद्दं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं एवं णागे जक्खे भूतेवि चउण्हं दीव समुद्दाणं ॥ ३५ ॥ कहिण भंते ! सयंभूरमणदीवगाणं चंदाण चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! सयंभूरमणस्सदीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंतातो सयंभूरमणोदगं समुद्द बारस जोयण सहस्साइ तहेव रायहाणीतो सयाणं २ दीवाण पुरत्थिमेणं सयंभूरमणोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं

वहां सूर्य द्वीप कहा है और द्वीप से पूर्व के समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां उनकी सूर्या नामक राजधानी कही है. ऐसे ही नागद्वीप, नागसमुद्र, यक्षद्वीप, यक्षसमुद्र भूतद्वीप व भूतसमुद्र का जानना. वे चारों द्वीप समुद्र समान जानना ॥३५॥ अहो भगवन्! स्वयंभूरमण द्वीप के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण द्वीप की पूर्व की वेदिका से स्वयंभूरमणोदक समुद्र में बारह हजार इसी क्रमसे राजधानी पर्यंत कहना. अपने द्वीपसे पूर्वमें स्वयंभूरमणोदक समुद्रमें असंख्यात हजार योजन जाने [illegible] द्वीप सूर्य का जानना [illegible] स्वयंभूरमण [illegible] पश्चिम की

जायण तहेव एवं सूराणंवि, सयंभूरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियंतातो रायहाणीओ सकाणं २ दीवाणं पच्चत्थिमेणं सयंभूरमणोदगं समुद्दं असंखेज्जा सेसं तहेव ॥ कहिणं भंते! सयंभूरमणसमुद्दकाणं चंदाणं चंददीवा पण्णत्ता? गोयमा! सयंभूरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंतातो सयंभूरमणं समुद्दं पच्चत्थिमेणं बारस जोयणं सहस्साइं उगाहित्ता सेसं तंचेव, एवं सूराणवि, सयंभुरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयंतातो रायहाणीउ सकाणं २ दीवाणं पुरत्थिमेणं सयंभूरमणोदगं समुद्दं असंखेज्जाइ सेसं तहेव ॥३६॥ अत्थिणं भंते ! लवणसमुद्दे वेलंधरातिवा णागराया अग्घातिवा सिहातिवा

वेदिका से जानना. इन की भी राजधानी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयंभूरमण समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां लग कहना. अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहां है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण समुद्र की पूर्व की वेदिका से बारह हजार योजन स्वयंभू रमणसमुद्र में जावे वहां चंद्रद्वीप कहा है वगैरह शेष सब पूर्ववत. ऐसे ही सूर्य का कहना. परंतु यहां स्वयंभूरमणसमुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना. राजधानी अपने द्वीप से पूर्व में स्वयंभूरमण समुद्र में असंख्यात योजन जावे वहां शेष सब वैसे ही कहना यावत् वहां सूर्य देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !

विज्जातिवा हासवड्ढीतिवा ? हंता अत्थि ॥ जह णं भंते ! लवण समुद्दे अत्थि वेलंधरोतिवा णागराइतिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्जातिवा हासवड्ढीतिवा तहाणं बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलंधरोइवा णागराइतिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्जातिवा हासवड्ढीतिवा ? णो तिण्ठे समठे ॥३७॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे किं ऊसितोदगे किं पच्छडोदगे खुभियजले किं अखुभियजले ? गोयमा ! लवणेणं समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे, खुभियजले नो अखुभियजले ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे

अर्थ

लवण समुद्र में वेलंधर, नाग राजा, अग्र, शिखा, नमण, प्राप्त, वृद्धि वगैरह क्या है ? हां गौतम ! है. अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में वेलंधर, नागराजा, अग्र, शिखा, नमण, प्राप्त, वृद्धि है वैसेही बाहिर के समुद्र में क्या वेलंधर, नागराजा, अग्र शिखा, नमण, प्राप्त व वृद्धि है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुच्छ ऊंचा शिखर वाला पानी है अथवा निम्न रहित है, क्या वायु से पानी क्षुब्ध होता है अथवा अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावाला है, परंतु प्रस्तारवंत नहीं है वायु से क्षुब्ध पानी है परंतु अक्षुब्ध नहीं है अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परंतु प्रस्तारवंत नहीं है, वायु से क्षुब्ध है परंतु

खुभियजले नो अक्खुभियजले तहाणं बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा नो पत्थडोदगा खुभियजला नो अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगाणं समुद्दाणं नो ऊसितोदगा पत्थडोदगा, नो खुभियजला अक्खुभियजला, पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ॥ ३८ ॥ अत्थणं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहका संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति ? हंता अत्थि ॥ जहाणं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहका संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति बाहिरएसु नो तिणट्ठे समट्ठे ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं

अथ

अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! बाहर के कालोद समुद्र प्रमुख का पानी ऊंचा शिखरवन्त, प्रस्तारवंत क्षुब्ध व प्रस्तारवन्त है व यु से क्षुब्ध नहीं है परंतु अक्षुब्ध जान है. क्यों कि इन में पाताल कलश नहीं हैं, वे पानी से परिपूर्ण भरे हुए हैं. पूर्ण प्रमाण भरे हैं, परिपूर्ण घट जैसे भरे हुवे हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में बहुत अप्कायरूप मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षते हैं ? हां गौतम ! वैसे ही उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं. जैसे लवण समुद्र में बहुत मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं वैसे ही क्या बाहिर के समुद्र में मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं ? यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! किस

अर्थ

वुच्चइ बाहिरगाणं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति? गोयमा! बाहिरएसुणं समुद्दे बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्तागए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति बाहिरगाणं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठंति ॥ ४० ॥ लवणेणं भंते ! केवतियं उव्वेह परिवड्ढिए पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सं समुद्दस्स उभउ पासिं पंचाणउतिं २ पदेसे गंता पएसं उव्वेह परिवड्ढिए पण्णत्ते पंचाणउतिं २ वालग्गाइं गंता वालग्ग उव्वेह परिवड्ढिते पण्णत्ते, एवं पंचाणउति २ लिखगंता लिखं उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घडे जैसे भरे हुवे हैं. अहो गौतम! बाहिर के समुद्र में बहुत अप्काय के जीव मेघ-वृष्टि विना उत्पन्न होते हैं व चवते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र भरे हुवे हैं यावत् परिपूर्ण घटसमान हैं ॥४०॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की गहराई में कितनी वृद्धि होती जाती है? अहो गौतम! लवण समुद्र के दो बाजुमें (जम्बूद्वीप व धातकी खण्ड) अंदर ९५-९५ प्रदेश जावे तब एक प्रदेश, ९५-९५ बालाग्र जावे तब एक बालाग्र गहराई वृद्धि पाती है. ऐसे ही ९५-९५ लिख जावे तब एक

परिवड्ढिए जूया जवमज्झे अंगुलि पिहत्थियरयणी कुच्छि धणु उव्वेह परिवड्ढिए गाउय
जोयणं जोयणसयं जोयण सहस्साइं गंता जोयण सहस्सं उव्वेह परिवड्ढिए पण्णत्ते
॥ ४१ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे केवतियं उस्सेह परिवड्ढिये पण्णत्ते ? गोयमा !
लवणस्सणं समुद्दस्स उभउपासिं पंचाणउति २ पदेसे गंता सोलस पदेसे उस्सेध
परिवुड्ढिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सणं समुद्दस्स एतेणेव कमेणं जाव पंचाणउति जोयण
सहस्साइं गंता सोलस जोयण सहस्साइंति उस्सेह परिवुड्ढिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सणं
भंते ! समुद्दस्स के महालये गोतित्थे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सणं समुद्दस्स
उभयो पासिं पंचाणउतिं २ जोयण सहस्साइं गोतित्थे पण्णत्ते ॥ लवणस्सणं भंते !

गहराइ जानना. ९५ हजार योजन जावे तब एक हजार योजन की गहराइ जानना. ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्
लवण समुद्र की शिखा कितनी ऊंची है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दोनों बाजु से ९५-९५ प्रदेश
अंदर जावे तब १६ प्रदेश शिखा ऊंची है, इसी क्रमसे ९५-९५ हजार योजन अंदर जावे तब १६ हजार योजन
शिखा ऊंची है अहो भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? (गोतीर्थ सो पानी का चढाव
उतार) अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजु ९५-९५ हजार योजन में गोतीर्थ है. अहो भगवन् !
लवण समुद्र में गोतीर्थ सहित समपानी कितने क्षेत्र में है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन के चक्रवाल

समुद्दस्स केमहालए गोतित्थविरहिए खेत्ते पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सणं समुद्दस्स दस जोयण सहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते ॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स केमहालए उदगमाले पण्णत्ते ? गोयमा ! दस जोयण सहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते ॥ ४२ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गोतित्थ संठिते नावासंठिए सिप्पिपुडसंठिए आसखंध संठिए वलभिसंठिते, वट्टवलयागार संठिते पण्णत्ते ॥ ४३ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे केवतियं चक्कवाल विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं केवतिय उव्वेहेणं केवतिय उस्सेहेणं केवतिय सव्वग्गेणं

में गोतीर्थ रहित पानी है. क्यों की इतना पानी का दगपाल है. अहो भगवन् ! लवण समुद्र में उदक माल है. वह कितना बडा कहा है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन का उदक माल कहा है. ॥४२॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का संस्थान कैसा है ? अहो गौतम ! गोतीर्थ संस्थान वाला, नावा के संस्थान वाला, छीप संपुट संस्थान वाला, अश्वस्कंध संस्थान वाला, वलभिगृह संस्थान वाला है. दोनों बाजु नम्र बना हुवा, बीच में ऊंचा, समुद्रोकार फीरता हुवा वलय संस्थान वाला है. ॥ ४३ ॥

सूत्र

सव्वर... ते कम्हाणं भंते ! लवणसमुद्दे जंबुद्दीवे २ नो उवीलेति नो उप्पीलेइ नोचेव एक्कोदगं करेइ ? गोयमा ! जंबूदीवेणं दीवे भरहएरवतेसुवासेसु अरहंत चक्कवट्टि बलदेवावासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणासमणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया पगति उवसंता, पगतिपयणुकोह माण माया लोभ मिउमद्दव सपन्ना अलीणा भद्दगा विणीता तेसिणं पणिहाय लवणसमुद्दे जंबूदीवे नो वीलेति नो उप्पलेति नोचेवणं एक्कोदकं करेति । गंगा सिंधुरत्ता रत्तवईसु सालिलासु देवयाउ महिड्डियाए जाव पलिओवमठितीयाओ

अर्थ

जलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरवत क्षेत्रमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव, जघाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है. और दूसरे भद्रिक व विनित प्रकृतिवाले, स्वभाव से ही क्रोध, मान, माया व लोभ पतले करने वाले, मृदुता संपन्न, वैराग्य संपन्न संसार में अलिप्त ऐसे मनुष्यों की नेश्राय से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र पानी नहीं डालता है, पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है और भी गंगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अधिष्ठायक देव महर्द्धिक यावत पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं. उन की नेश्राय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है. और भी चुल्लहिमवंत व शिखरी

सूत्र

परिवसंति, तासिणं पणिहाय लवण समुद्दं जाव ना चवेणं एक्कादय करात ॥ चुल्लहिमवंत सिहरिसु वासधरपव्वतेसु देवा महिड्ढिया तेसिं पणिहाय हेमवयएरन्नवएसु वासेसु मणुया पगति भद्दगा रोहिता रोहितंससुवण्णकूलरुप्पकुलासु सलिलासु देवयाउ महिड्ढियाओ तासिं पणिहाय सद्दावतिं वियडावतिवट्ट वेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्ढिया जाव पलितोवमठितीया पण्णत्ता महाहिवंत रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्ढिया जाव पलिउवम ठितीयाय हरिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभद्दगा, गंधावातिमालवंत परितातेसु वट्टवेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्ढिया णिसढ णिलवतेसु वासहर पव्वएसु

अर्थ

उनकी नेश्राय से लवण समुद्रका पानी नहीं आता है, हेमवय एरयवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव से भद्रिक विनीत है. इस के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता हैं. और भी रोहिता, रोहितंसा, सूवर्णकुला व रूपकुला इन चार नदि यों के महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं. इनके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है. शब्दापाति विकटापाति वृत वैताढय पर्वत में महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं. इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. महाहिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,

देवा महिड्ढिया सव्वाओ दहदेवीओ भाणियव्वाओ पउमद्दहाओ तेगिच्छकेसरिद्दहा
वसाणेसु देवीयाउ महिड्ढिया तासि पणिहाये पुव्वविदेह अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता
चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा सावियाओ
मणुस्सा पगइभद्दगा तेसिं पाणहाय लवणे सीता सीतोदगासु सलिलासु देवता महिड्ढिया
देवकुरुउत्तरकुरुमणुया पगतिभद्दगा मंदरे पव्वते देवा महिड्ढिया, जंबूएणं
सुदंसणाए जंबुद्दीवाहिवइअणाढिए णाम देवेमहिड्ढिए जाव पलिओवमट्ठितीए
परिवसति, तस्स पाणहाय लवणसमुद्दे णो उवीलेति जाव नोचेवणं एकोदगं करेंति

व विनीत प्रकृति वाले रहते हैं. इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. नरकांता नारीकांता, सुवर्णकूला व रूपकूला इन चार नदियों पर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, गंधापाति व मालवंत नामक वृत्त वैताढ्य पर्वत पे महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभाव से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र का पानी नहीं आता है निषध व नीलवंत वर्षधर पर्वत पर महर्द्धिक देव रहते हैं. उनके प्रभावसे लवणसमुद्रका पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. पद्मद्रह, महापद्मद्रह, पुंडरीकद्रह, महापुंडरीकद्रह, तीगिंछद्रह केसरीद्रह, इन में

अनुवादक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी

प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

अनुवादकर्ता गोयमा ! लोगट्ठिति लोगाणुभावे जन्नं लवणेसमुद्दे जंबुद्दीवं २ नो उवीलेति नो उवीलेति

म चक्कवाल संठिते ॥ २ ॥ धायतिसंडेणं भंते ! दीवे केवतिये चक्कवाल विक्खंभेण केवइयं परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! चत्तारि जोयण सयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेण एगयालीसं जोयण सतसहस्साइं दस जोयण सहस्साइं णवएकट्ठे जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते, सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ, दीवसमिया परिक्खेवेणं ॥ ३ ॥ धायतिसंडस्सणं भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता गोयमा ! चत्तारि दारा

धातकी खण्डद्वीप क्या समचक्रवाल है या विषम चक्रवाल है ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप समचक्रवाल है परंतु विषमचक्रवाल नहीं है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्डद्वीप कितना चक्रवाल में चौडा है, कितना परिधि में है ? अहो गौतम ! चार लाख योजन का चक्रवाल चौडा है और इकतालीस लाख दश हजार नवसो इक्कठ योजन से कुछ कम परिधि में है. एक लाख योजन का जम्बूद्वीप, दो लाख योजन का लवण समुद्र पूर्व पश्चिम मीलकर चार लाख हुवे और चार लाख योजन का धातकी खण्ड द्वीप है. इस के दोनों बाजु विखंभ से ८ लाख हुए इससे सब मीलकर १३ लाख योजन हुवे इससे कुछ अधिक परिधि है. इस धातकी खण्डद्वीप को एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है. इन का वर्णन सब पूर्ववत् जानना. यह द्वीप समान परिधि से चौरस हुवा है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! धातकी

पण्णत्ता तंजहा-विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ७ ॥ कहिणं भंते ! धायतिसंडस्सणं दीवस्स विजये ...

सूत्र

जोयणसते तिण्णिय कोसे दारसय २ आव हाये अंतरे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ धायइ संडस्सणं भंते! दीवस्स पदेसा कालोयणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥ तेणं भंते ! किं धायइसंडे दीवे कालोयणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे नो खलु ते कालोयण समुद्दे, एवं कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडेदीवे जीवा उद्दाइत्ता २ कालोयणे समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायंति अत्थेगइया नो पच्चायंति, एवं कालोयणेवि, अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

अर्थ

योजन और तीन कोश का अंतर कहा है. ॥६॥ अहो भगवन् धातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश कालोद समुद्र को क्या स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्श कर रहे हैं. अहो भगवन् ! वे धातकी खण्ड द्वीप के हैं या कालोद समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे धातकीखंड द्वीप के हैं परंतु कालोद समुद्र के नहीं हैं. अर्थात् वह भाग धातकी खण्ड का है. परंतु कालोद समुद्र का नहीं है. ऐसे ही कालोद समुद्र की पृच्छा करना. अहो भगवन्! धातकी खण्ड द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही कालोदधि समुद्र के कितनेक जीव धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! धातकी

सूत्र

एवं पुक्खर धायइसंडेदीवे २ ? गोयमा! धायइसंडेणं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे धायइ रुक्खा धायइवणा धायइसंडा णिच्च

सूत्र सोभसोभिंसुवा ३ ? गोयमा ! बारस चंदा पभासिंसुवा, एवं चउवीसं, ससिरविणो णक्खत्त सताय तिण्णि छत्तीसा, एगंच सहस्स छप्पणं धायइ संडे अट्ठेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साइं सत्तयसयाइ धायइसंडदीवे तारागण कोडाकोडीणं सोभंसुवा ३ ॥ ९ ॥ धायइसंडेण दीवं कालोदं नामं समुद्दे वट्टे वलयागार संठाण संठिते सव्वओ समता संपरिखिवित्ताणं चिट्ठइ ॥ कालोदेणं भंते! समुद्दे किं समचक्कवाल संठाण संठिते विसमचक्कवाल संठाण संठिते? गोयमा! समचक्कवाल संठाण संठिते णो विसम चक्कवाल संठाण संठिते ॥ कालोदेणं भंते! समुद्दे केवतियं

अर्थ योग किया, करते हैं व करेंगे, कितने क्रोडाक्रोडतारा शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ? अहो गौतम ! बारह चंद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे. बारह सूर्य तपे, तपते हैं. व तपेंगे, यों सब मीलकर चंद्र सूर्य २४ हुए. तीनसौ छत्तीस नक्षत्र. एक हजार छप्पन ग्रह, आठ लाख तीन हजार सातसौ क्रोडा क्रोड तारा शोभित हुवे. शोभते हैं व शोभित होंगे. ॥ ९ ॥ धातकी खण्डद्वीप की चारों ओर कालोद समुद्र वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला रहा हुवा है. अहो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है. अहो भगवन् ! काल

सूत्र चक्कवाल विक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं एक्काणउतिं जोयण

का[illegible] समुद्दस्स विजयपुण्णामंदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तंचेव प्पमाणं जावरायहाणीओ कहिणं भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स विजयंते णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा पेरते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थणं कालोय समुद्दस्स विजयंते णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिणं भंते! कालोय समुद्दस्स जयंते नामंदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेणं सीताए महाणदीए उप्पिं जयते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिणं भंते ! अपराजिए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

अर्थ वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध मे उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है. अहो भगवन् ! अपराजित वह द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है. शेष सब वैसे ही कहना. अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

पूर्वभवाद्धकाद्धकाद्धक

छावट्ठं छावट्ठीयं होइ एक्केक्किया पंती ॥११॥ छावत्तरं सहाणं चउसट्ठं होइ अणुसेढीगमि ॥ छावट्ठी छावट्ठी होइ एक्केक्किया पंती ॥ १२॥ तेसेहं अणुसेढीहिं, एवं दिसा वण्ण मंडलासव्वे; अणवट्ठिएहिं तेहिं, जोएहिं चंदसूरा सहाणत्थे ॥ १३ ॥ णक्खत्त तारागाण, अवट्ठिता मंडलमुणेयव्वा, तेवियवहिणारत्त तेवनर अणुपवेसंति ॥ १४॥ रयणियर दिणयराण उड्ढय अहेय संकमंत्थि॥मंडल सहसमुज्जुअ अणवत्थ हिं तिरिच्छि ॥१५॥ रयणियरदिणयराण णक्खत्ताण महागहाणंच चार दिसेसेण भवेइह दुक्खवेइ

है. [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ उपरोक्त सब ग्रह मेरु पर्वत के चारों ओर प्रदक्षिणा करते हैं अर्थात् उन के साथ ये भी गति करते हैं यहां यह सूर्य द्वारा अनवस्थित हैं वहां की दशा देख के अन्य ग्रह [illegible] गमन करते हैं ॥ १३ ॥ और नक्षत्र व तारागण अवस्थित हैं अर्थात् उन मंडल में परिभ्रमण नहीं करते हैं यह भी मेरु की आसपास प्रदक्षिणा करते हैं ॥ १४ ॥ चंद्र व सूर्य के ऊपर अथवा नीचे संक्रमण गति नहीं है. परंतु अपने मंडल में ही गति है. अर्थात् आभ्यंतर व बाह्य के मंडल में [illegible] गमन है ॥ १५ ॥ चंद्र, सूर्य [illegible]

सूत्र पण्णरसविभागेणय, चंदपण्णरसमेव आवरति ॥ पण्णरसविभागेणय, तेणेव कमेणं वड्ढमांति ॥ २२ ॥ एव वड्ढति चदा,परिहाणि एवं होति चंदस्स॥ कालोवा जोण्होवा, तेणणुभावेणं चदस्स ॥ २३ ॥ अतो मणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगाय उववण्णा, पचविहा जोतिसिया चंद सूराग्गह णक्खत्ता॥ २४ ॥ तेणपरं जे सेसा, चदाइच्चगहतार णक्खत्ता ॥ णत्थिगतीण विचारा, अवट्ठिता तेमुणेयव्वा ॥ २५ ॥ एगं जबुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउगुणा हा॥ता॥लवणगायतिगुणिया समिसूरा धायई संडे॥२६॥दो चंदा इह

अर्थ चार २ भाग शुक्ल पक्ष में खुल्ला करता है और ऐसा ही चार भाग कृष्ण पक्ष में राहु अच्छादित करता है. अमावास्या के दिन दो भाग खुल्ले रहते हैं ॥ २१ ॥ चंद्र विमान के पन्द्रह भाग करे उस में से एक २ भाग प्रतिदिन कृष्ण पक्ष में ढके यों अमावास्या तक सब भाग ढक जावे. और शुक्ल पक्ष में एक २ भाग खुल्लाकर देव यों पूर्णिमा तक सब मुक्त हो जावे ॥२२॥ इस तरह शुक्ल पक्षमें चंद्रमा बढता है व कृष्ण पक्ष में हीन होता है और कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष इसी तरह होते हैं॥ २३ ॥ मनुष्य क्षेत्र में चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा ये पाच प्रकार के ज्योतिषी चलनेवाले हैं ॥ २४ ॥ इस से आगे के द्वीप में चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा अवस्थित हैं. इन की गति नहीं है ॥ २५ ॥ अब द्वीप समुद्र गत चंद्र सूर्यादिक की संख्या जानने का कारण कहते हैं

सूत्र

सहस्साइंतु, जोयणाणंतु अणूणाति॥ ३१॥सूरस्सय सरस्सय, ससिणोयससिणोय॥ अंतरं होति माणुसनगस्स, बहियाओ जोयणाणं सय सहस्सं॥ ३२॥सूरंतरिया चंदा, चदंतयाय दिणयरादित्ता ॥ चित्तंतरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसाय ॥ ३३ ॥ अट्ठासीयंच गहा अट्ठावीसं च होंति णक्खत्ता ॥ एगससी परिवारो एत्तो तारागण वोच्छामि ॥ ३४ ॥ छावट्ठि सहस्साइं, णव चेव सयाइं पचसत्तराइं ॥ एग ससी परिवारो, तारागण कोडिकोडीणं ॥ ३५ ॥ २४ ॥ माणुसुत्तरेणं भंते ! पव्वते केवतियं उड्ढं उच्चत्तेणं

अर्थ

इस लिये मनुष्य लोक जैसे योग नक्षत्रोंका नहीं होता है. वहां चंद्र अभिजित् नक्षत्र युक्त सदैव रहता है और सूर्य पुष्य नक्षत्र युक्त सदैव रहता है वहां चंद्र से सूर्य व सूर्य से चंद्रका अंतर पचास२ हजार योजनका है ॥ २२ ॥ सूर्य से सूर्य व चंद्र से चद्र का अंतर वहां एक लाख योजन का है ॥ ३० ॥ सूर्य के अंतरित चंद्र हैं व चंद्र से अंतरित सूर्य हैं. वे दीप्तिवंत हैं, अपनी २ मर्यादा से तेजवंत हैं, सुखकारी व मंद लेश्यावंत हैं अर्थात् चंद्र अति शीतल नहीं है वैसे ही सूर्य अती ऊष्ण नहीं है ॥ ३२ ॥ एक चंद्र के परिवार में अठासी ग्रह, अट्ठाइस नक्षत्र व [illegible]

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पडिवासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा साविगाओ मणुया पगाति भद्दगाविणीता तावं चाणं अरिंसलोएति पवुच्चति जावं चेणं समपातिवा आवलयातिवा आणापाणइवा थोवाइवा लवातिवा मुहुत्तातिवा, दिवसातिवा, अहोरत्तातिवा पक्खातिवा मासातिवा उडूतिवा अयणातिवा संवच्छरातिवा जुगाइवा वासातिवा वाससत्तातिवा, वाससहस्सातिवा, वाससयसहस्सातिवा, पुव्वंगातिवा, पुव्वाइवा, तुडियंगातिवा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णलिए अत्थणिउरे अयुते नओए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियंगातिवा सीसपहेलियातिवा, पलिओवमेतिवा

वगैरह हैं वहांलग मनुष्य क्षेत्र है. जहांलग गाम यावत् राजधानी है वहांलग यह मनुष्य लोक है. जहांलग अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, जंघा चारण, विद्या चारण, विद्याधर, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका व भद्रिक प्रकृति वाले मनुष्य हैं वहां लग यह मनुष्य क्षेत्र है. जहांलग समय, आवलिका श्वासोश्वास, स्तोव, लव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, वर्ष, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लाख वर्ष, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित ऐसे ही अडड, अवव, हुहुय, उत्पल,

अभिगमण निगमण वुड्ढि निवुड्ढि अणवट्ठित संठाण संठिती आघवेज्जति तावंचणं अस्सिलोएति पवुच्चति ॥ २७ ॥ अंतोणं भंते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाणं तेणं भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववन्नगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेणं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गतिसमावण्णगा, उड्ढमुह कलंबुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

अर्थ

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं. नीचले लोक में अपने ज्योतिषी के विमान में उत्पन्न होते हैं [illegible]

खेचरगा जे चंदिम सूरिय गहगण नक्खत्त तारारूवाणं तेणं भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेणं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा,नो चारोववण्णगा चारठितीया,नो गतिरतिया नो गतिसमावण्णगा,पकिट्ठग संठाण संठितेहिं जोयण सयसाहस्सिएहिं ताव्वखेत्तेहिं सय साहस्साहिय बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया २ णट्टगीय वादितरवेणं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरंति, जाव सुभलेस्सा, सीयलेस्सा मंदालेस्सा मंदयवलेस्सा चित्तंतरलेस्सा कुडाइव ठाणठिता

अर्थ

ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषी देव हैं वे उर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न है, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं. चारस्थित हैं, गति में रक्त है या गति समापन्न हैं क्या? अहो गौतम! वे देव उर्ध्व उत्पन्न व कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु अपने २ विमान में उत्पन्न होते हैं. चलने वाले नहीं हैं परंतु स्थिर हैं, गति में रक्त व गति समापन्न नहीं हैं. पकी हुई ईंट के संस्थान वाले है. अनेक लाख योजन पर्यंत ताप क्षेत्र और लाखों गम बाहिर की विकुर्वित परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत वादित्र के शब्द से दिव्य भोगोपभोग भोगते करते हैं. भावन शुभ लेश्या, शीतलेश्या, मंदलेश्यावाले हैं. चित्रांतर लेश्यावाले व परस्पर अवर

वेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! संखेज्जाति जोयणसय सहस्साति चक्कवाल विक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयण सय सहस्साति परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ पुक्खरोदस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तहेव सव्वं, पुक्खरोदग समुद्द पुरत्थिमपेरंते वरुणवरदीवे पुरच्छिमद्धस्सपच्छिमेणं एत्थणं पुक्खरोदस्स विजये नामं दारे पण्णत्ते, एवं सेसाणावि दारंतरंमि संखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते, पदेसा जीवाय तहेव ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति पुक्खरोदे समुद्दे २ ? गोयमा ! पुक्खरोदस्सणं समुद्दस्स

अर्थ

संख्यात लाख योजन की परिधि है. अहो भगवन् ! पुष्करोदधि समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! चार द्वार कहे हैं वैसे ही सब जानना. अर्थात् पुष्करोदधि के पूर्व के अंत में पूर्व के वारुणि द्वीप से पश्चिम में पुष्करोदधि का विजय द्वार कहा है. ऐसे ही शेष सब द्वारों का कथन जानना. संख्यात लाख योजनका अबाधासे अंतर कहा है. प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह कथन पूर्ववत् जानना, अहो भगवन् ! पुष्करोदधि नाम क्यों कहा है ? अहो गौतम ! पुष्करोदधि का पानी स्वच्छ, निर्मल, पथ्यकारी जातिवंत व रसका और स्फटिक रत्न समान निर्मल है. वहां बहुसंख्यक यावत् चन्द्रोदय की स्थिति वाले दो देव रहते

परिक्खेवेणं पण्णत्ते, पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ दारंतरेणं पदेसा जीवा तहेव सव्वं सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वारुणवरदीवे २ ? गोयमा ! वारुणवरेणं दीवे तत्थ२ देसे २ तहिं २ बहवे खुड्डा खुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ अच्छाओ पत्थेयं २ पउमवरवेइया वणसंड परिक्खित्ता वारुणोदग पडिहत्थाओ पासादीयाओ ४, तासुणं खुड्डा खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाय पव्वया जाव खडहडगा सव्वफलिहामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पभा ॥ एत्थ दो देवा माहिड्ढिया जाव परिव संति. से तेणट्ठेणं जावणिच्चं,जोतिसं सव्वं संखिज्जगुणं जाव तारागण कोड कोडीओ,

पद्मवर वेदिका,व वनखण्ड है. द्वार के अंतर प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह सब पूर्ववत् जानना. अहो भगवन् ! किसलिये वारुणवर नाम रखा ? अहो गौतम ! वारुणवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी वापडियों यावत् बिल पंक्तियों हैं. वे स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं. प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व वनखण्ड वेष्टित है. वारुणोदक (पद्मिरामयान पानी) कर परिपूर्ण प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं. उन छोटी बडी वापडियों यावत् बिल पंक्तियों में बहुत उत्पात पर्वत यावत् खडहडक हैं. सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ व वर्णप्रभावाले हैं. यहां वरुण व वरुणप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं. इस लिये इस का वारुणवर नाम. अहो हे भगवन् ! यह

सूत्र

॥२४॥वरुण वर पाव[illegible]

विसंठिति तहेव सव्वं भाणियव्वं, विक्खंभ परिक्खेवो संखेज्जाइं जोयण दारंतरंच पउमवर वणसंडे पएसा जीवा० अत्थे० ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति वरुणोदे समुद्दे ? गोयमा ! वरुणदस्सणं समुद्दस्स उदगे से जहा नामए चंदप्पभाइवा मणसिलागाइवा वरसिंधु वरवारुणीइवा पत्तासवेइवा पुप्फासवेइवा चोयासवेइवा फलासवेइवा महुमेरएइवा जातिप्पसन्नाइवा खज्जूरसारेइवा मुदियासारेइवा कापिसाइणेइवा सुपक्कए खोयरसेइवा पमुतसभारसंनिता पोसमास सनभिसय जोग ठविच्चा निरुवहत विसिट्ठ दिण्ण कालोवयारी सुद्धावा उक्कोसगअट्ठ

अर्थ

द्वीपके चारों ओर वारुणोदधिसमुद्र वर्तुल वलयाकार यावत् रहा हुवा है. वह सब चक्रवाल संस्थानवाला है. चौडाइ व परिधि संख्यात योजन की कहना. द्वारांतर भी ऐसे ही कहना. पद्मवर वेदिका. वनखण्ड, प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह पूर्ववत् जानना. अहो भगवन्! वारुणोदधि नाम क्यों कहा है? अहो गौतम! वारुणोदधि का पानी जैसे चंद्र प्रभा मदिरा, मणसिला का मदिरा, प्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी (पद्म विशेष) पत्रका आसव, पुष्पका आसव, चूआ वनस्पतिका आसव, फलका आसव, मधुमेरक, जातवंत रसका मदिरा, खजूर सार, द्राक्ष सार, कापिसायन, अच्छी तरह पकाया हुवा सेंदी का रस सपान मद्य, बहुत संभार से बना हुवा, पोष मास में बनाने के योग सहित निरुपहत, बहुत उपचार से बनाइ हुइ सुरा, सुधा अमृत

पिट्ठपुट्ठा मुखाइतवरिमंदिण्ण कइमाकोमपला अच्छा वरवारुणी अतिरसा
आसूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा बलंविणी अहिय महुर२ पेज्जइसीसरत्त जेत्ता
कोमल कवोल करणी आव आसादिता विसीता अणिहुय संलाव करण हरिसपीति
लक्खणी सतोस विन्नो कहाव विभमविलास वेल्ल हल गमल करणी विवण अहियमत्त
अणवाव होति संगामदेसकाले कायर नरसमरवसरकरणी कहिणाग विज्जुयति हियया ग
मउवकरणीहोति उवरेसितासमाणीगाति.खलाविनेग्ग सयलेमि विसमावुप्फालिया सरमग्ग
वेजं सहगारसुरभिरस दिवीया सुगंधा आसावणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणणिज्जा
मयणिज्जा दप्पणिज्जा सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जा, आसला मासला पेसला

सवाव वाहर्ष मे अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, मुख मे बनाई हुई कदंब समान एवायणी प्रमुख
वस्तु से बनाई हुई हाथी प्रमुखकारी निर्वेद प्रधानवत् वारुणी अती रस युक्त, जामबू फल के पृष्ठ भाग
समान वर्णवाली, ओष्ठ के अलंकार करनेवाली अर्थात्—ईषत् नमा वह ऐसी, अधिक मधुर पीने
योग्य, विविध भाव वस्तु बनाने, कपोल स्थल कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुराग कार्य रने-
वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, संलाप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, बहुत मन करनेवाली, विशेष अधिक मत्त
उत्पन्न करनेवाली, रण संग्राम युद्ध युक्त, हरण कोपक बनानेवाली, [illegible]

पुक्खरिणीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाए पव्वयगा सव्वरयणमया जाव पडिरूवा॥ पंडुरीय पुप्फदंता इत्थ दोदेवा महिड्ढिया जाव परिवसंति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे जाव जोतिसं सव्वं संखेज्जं ॥ ३६ ॥ खीरवरेणं दीवं खीरोदेणामं समुद्दे वट्टे वलियागार संठाण संठिए जाव परिक्खित्ताणं चिट्ठति समचक्कवाल संठिते नो विसमचक्कवाल संठिते, संखेज्जाइं जोयणाइं सहस्साइं विक्खंभो परिक्खेवो तहेव सव्वं जाव अट्ठो, गोयमा ! खीरोयस्सणं समुद्दस्सउदगं से जहा नामते

वावड़ीयों यावत् सरसर पंक्तियों में दुग्ध जैसा पानी भरा हुवा है. उन वावड़ीयों में बहुत उत्पात पर्वत हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं. यहां पुंडरीक व पुष्पदंत नामक महर्धिक दो देव रहते हैं. इसलिये नित्य कहा है. चंद्रादिक ज्योतिषी देव संख्याते कहे हैं ॥ ३६ ॥ खीरवर द्वीप के चारों ओर क्षीरोदधि नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है. सब चक्रवाल संस्थान वाला है. परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है. संख्यात योजन का चक्रवाल चौड़ा व संख्यात योजन की परिधिवाला है. वैसे ही सब कहना. यावत् अहो भगवन् ! खीरोद ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जैसे

काण पडरसी पण्णत्ताण सद्दाण मणमासकाले संगाहिते होज्ज चाउरक्केवहेज्ज-
तासि, खीर महुरत विरिगच्छ बहुदव्व संपयुते, पयत्त मंदगीसु कडिती आउत्तरखंड
गड मच्छडिता वावरेत्तो चाउरंत च उरंतचक्कव हिस्स उवट्ठविए आस्साद णिज्जे विसायणिज्जे
पीणणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हादणिज्जे जाव वण्णेणं उववेए जाव फासेणं
भवेयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्सणं से उदगे एत्तो
इट्ठतरगेव जाव आसाएणं पण्णत्ते, विमले विमलप्पभाए इत्थदोदेवा
महिड्ढिया जाव परिवसंति, से तेणट्ठेणं ससेज्जा चंदा जाव तारा ॥ ३७ ॥

अर्थ

पथ्य रस सहित होवे उसे महाग्नि से पकाकर उसमें शक्कर, गुड, मिश्री डालकर चातुरंत चक्रवर्ती के लिये खाने योग्य खीर बनावे वह स्वाद योग्य, शरीर में पुष्टि करनेवाली यावत् सब गात्र को आनंदकारी होवे, शुभवर्ण यव यावत् स्पर्श, यक्कोरो. अहो भगवन् क्षीर समुद्र का पानी क्या ऐसा है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्षीरोद समुद्रका पानी इस से भी अत्यंत यावत् आस्वाद योग्य है. यहां विमल और विमल प्रभ नामक दो महर्द्धिक देव यावत् रहते हैं. उस कारन से क्षीरोद समुद्र ऐसा नाम कहा है. इस में